उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

समीक्षा अधिकारी/ सहायक समीक्षा अधिकारी

मुख्य परीक्षा

सामान्य हिन्दी एवं आलेखन

(परम्परागत)

प्रधान सम्पादक
आनन्द कुमार महाजन

सम्पादक
अभिषेक सिंह

संपादन एवं संकलन
परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण एवं चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com
© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP YCT BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय सूची

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. लोक सेवा आयोग (PCS & RO/ARO) मुख्य परीक्षा सामान्य हिन्दी, पत्र आलेखन एवं निबंध

भाग-1

■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2023 प्रश्न-पत्र का हल.....5-9
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2022 प्रश्न-पत्र का हल.....10-14
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2021 प्रश्न-पत्र का हल.....15-19
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2020 प्रश्न-पत्र का हल.....20-24
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2019 प्रश्न-पत्र का हल.....25-29
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2018 प्रश्न-पत्र का हल.....30-34
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2021 प्रश्न-पत्र का हल.....35-37
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2016 प्रश्न-पत्र का हल.....38-40

भाग-2

उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी

■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2017 प्रश्न-पत्र का हल.....1-4
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2014 प्रश्न-पत्र का हल.....5-8
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2013 प्रश्न-पत्र का हल.....9-12
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (विशेष) (मुख्य) परीक्षा, 2010 प्रश्न-पत्र का हल.....13-16
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2010 प्रश्न-पत्र का हल.....17-19
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (विशेष) (मुख्य) परीक्षा, 2006 प्रश्न-पत्र का हल.....20-21
■ उत्तर प्रदेश समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2006 प्रश्न-पत्र का हल.....22-23
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 2001 प्रश्न-पत्र का हल.....24-26
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 2000 प्रश्न-पत्र का हल.....27-30
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 1995 प्रश्न-पत्र का हल.....31-33
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 1993 प्रश्न-पत्र का हल.....34-36
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 1991 प्रश्न-पत्र का हल.....37-39
■ उत्तर प्रदेश सचिवालय/लोक सेवा आयोग प्रवर/अवर वर्ग सहायक (मुख्य) परीक्षा, 1989 प्रश्न-पत्र का हल.....40-41
■ उत्तराखण्ड समीक्षा अधिकारी (मुख्य) परीक्षा, 2007 प्रश्न-पत्र का हल.....42-44
■ उत्तराखण्ड पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2002 प्रश्न-पत्र का हल.....45-47

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा

■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2017 प्रश्न-पत्र का हल.....48-51
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2017 (निरस्त) प्रश्न-पत्र का हल.....52-54
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2016 प्रश्न-पत्र का हल.....55-58
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2015 प्रश्न-पत्र का हल.....59-62
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2014 प्रश्न-पत्र का हल.....63-66
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2013 प्रश्न-पत्र का हल.....67-70
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2012 प्रश्न-पत्र का हल.....71-73
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2011 प्रश्न-पत्र का हल.....74-77
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2010 प्रश्न-पत्र का हल.....78-81

■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2009 प्रश्न-पत्र का हल 82-85
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, (विशेष) 2008 प्रश्न-पत्र का हल 86-89
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा 2008 प्रश्न-पत्र का हल 90-93
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2007 प्रश्न-पत्र का हल 94-96
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2006 प्रश्न-पत्र का हल 97-100
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2005 प्रश्न-पत्र का हल 101-103
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, (विशेष) 2004 प्रश्न-पत्र का हल 104-107
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2004 प्रश्न-पत्र का हल 108-111
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2003 प्रश्न-पत्र का हल 112-113
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2002 प्रश्न-पत्र का हल 114-117
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2001 प्रश्न-पत्र का हल 118-120
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2000 प्रश्न-पत्र का हल 121-123
■ उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 1999 प्रश्न-पत्र का हल 124-126

उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा

■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2015 प्रश्न-पत्र का हल.....127-128
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2013 प्रश्न-पत्र का हल.....129-130
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2009 प्रश्न-पत्र का हल.....131-132
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा (विशेष), 2008 प्रश्न-पत्र का हल.....133-135
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2008 प्रश्न-पत्र का हल.....136-137
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा (विशेष), 2006 प्रश्न-पत्र का हल.....138-139
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2004 प्रश्न-पत्र का हल.....140-141
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2003 प्रश्न-पत्र का हल.....142-144
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा (विशेष), 2002 प्रश्न-पत्र का हल.....145-147
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 2002 प्रश्न-पत्र का हल.....148-151
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 1998 प्रश्न-पत्र का हल.....152-153
■ उत्तर प्रदेश लोवर सर्बाडिनेट (मुख्य) परीक्षा, 1990 प्रश्न-पत्र का हल.....154-154

महत्वपूर्ण पत्र आलेखनों का नमूना

■ कार्यालय ज्ञाप का नमूना 155-157
■ सरकारी पत्र का नमूना.....158-160
■ अनुस्मारक का नमूना.....161-162
■ अर्द्धशासकीय पत्र का नमूना.....163-166
■ कार्यालय आदेश का नमूना.....167-169
■ परिपत्र का नमूना.....170-172
■ अधिसूचना का नमूना.....173-177
■ शासनादेश पत्र का नमूना.....178-180
■ अशासकीय पत्र का नमूना.....181-181
■ प्रेस विज्ञप्ति का नमूना 182-183
■ विज्ञापन का नमूना 184-187
■ टिप्पण का नमूना.....188-192
■ सारणी लेखन का नमूना.....193-200

समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी

मुख्य परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम

खण्ड-1

सामान्य हिन्दी एवं आलेखन (परम्परागत)

1. दिए हुए गद्यांश का शीर्षक, सारांश एवं तीन रेखांकित अंशों की व्याख्या

   3 + 6 + 12 अंक — 12 अंक

2. किसी दिए हुए सरकारी पत्र का सारिणी रूप में सार लेखन। — 15 अंक

3. पत्राचार– — 24 अंक

   (i) शासकीय/अर्द्धशासकीय पत्र

   (ii) कार्यालय आदेश/ज्ञाप/परिपत्र

   (iii) विज्ञप्ति/टिप्पण एवं प्रतिवेदन अनुस्मारक

4. परिभाषिक शब्दावली (प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक शब्दावली)

   (i) अंग्रेजी से हिन्दी (पाँच शब्द) — 10 अंक

   (ii) हिन्दी से अंग्रेजी (पाँच शब्द) — 10 अंक

   (iii) मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (केवल पाँच) — 10 अंक

5. कम्प्यूटर ज्ञान — 10 अंक

खण्ड-2

हिन्दी निबन्ध

हिन्दी निबन्ध — 120 अंक

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस मुख्य परीक्षा, 2023

सामान्य हिन्दी

निर्धारित समय : तीन घंटे | **अधिकतम अंक : 150**
Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंत में निर्धारित अंक अंकित हैं।
(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य किसी का नाम, पता (प्रश्नपत्र में दिये गये नाम, पदनाम आदि को छोड़कर) एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग उल्लेख कर सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

हमारा सांसारिक जीवन एक-न-एक दिन खत्म होगा ही लेकिन हमें स्मरण रखना चाहिए कि हमारी देह एक मशाल है जो निरंतर संसार को, समाज को आलोकित कर उसका मार्गदर्शन कर सकती है। यानी हमारा यह जीवन निष्प्रयोजन नहीं होना चाहिए, समाज के लिए हमें एक कर्मठ एवं ओजस्वी जीवन का अभिलाषी होना चाहिए। हमें असहाय, निर्बलों का संबल बनना चाहिए, हमारा संपूर्ण सांसारिक जीवन किसी उत्तम लक्ष्य की प्राप्ति में व्यतीत होना चाहिए कि हम संसार से जाएँ तो लोग हमें स्मरण कर सकें। हमारे जीवन लक्ष्य सत्कर्म हैं और सत्कर्म हमारी देह के माध्यम से ही हो सकता है। हम हमारे कार्यों को अपनी देह के संचालन के द्वारा ही तो संपादित करते हैं। यदि हमारे कार्य इतने संकीर्ण हों, केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए हों तो फिर देह हमारे घर में जल रहे एक दीपक की तरह ही होगी जिसके प्रकाश का लाभ केवल हमें ही मिलेगा। किन्तु यदि हम लोकहित के कार्यों में संलग्न हैं तो समझिए कि हमारी देह एक मशाल की तरह है जिसकी रोशनी से दूसरे न केवल प्रभावित हैं बल्कि प्रेरित भी हैं। मशाल में वह ताकत है कि दूसरों में उत्साह भर कर अन्य मशालों को आमंत्रित कर सकती है और अन्याय-उत्पीड़न रूपी अंधकार में विरोध का, आजादी का, नये परिवर्तन का प्रकाश फैला सकती है।

(क) उपरिलिखित गद्य का आशय अपने शब्दों में लिखिए। 5

(ख) 'जीवन निष्प्रयोजन नहीं होना चाहिए' से क्या अभिप्रेत है? 5

(ग) गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या अपने शब्दों कीजिए। 20

उत्तर-(क)

मानव जीवन शाश्वत नहीं है। हम सब एक-न-एक दिन खत्म हो जाएंगें। ऐसे में हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारा जीवन निष्प्रयोजन न होने पाए। हमारा कार्य संकीर्ण स्वार्थ पर केन्द्रित नहीं होना चाहिए। संकीर्ण स्वार्थ से प्रेरित कर्म हमारे घर में जल रहे उस दीपक की भाँति हैं, जिससे केवल हमीं लाभान्वित होते हैं। हमारा कार्य वंचितों तथा असहायों के कल्याण के लिए होना चाहिए। यह कार्य न केवल निर्बलों के उत्थान का माध्यम होगा अपितु दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनेगा।

उत्तर-(ख)

'जीवन निष्प्रयोजन नहीं होना चाहिए' से लेखक का अभिप्रेत है कि मानव जीवन कर्मठ एवं ओजस्वी हो। हमें असहाय व निर्बलों का सहारा बन उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। हमारा सम्पूर्ण जीवन मानवतावादी मूल्यों की स्थापना के लिए हो ताकि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें याद रखें।

उत्तर-(ग)

हमारी देह ..... फैला सकती है।

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।''

उपर्युक्त पंक्ति लेखक के मंतव्य को प्रस्तुत कर रही है कि यदि हम वंचितों, गरीबों व असहायों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहते हैं तो हमारा यह कार्य जनकल्याण के साथ दूसरे को प्रेरित करने वाला भी बन जाता है। जिस प्रकार एक मशाल दूसरों को रोशनी देने के साथ अन्य मसालों को उत्साहित कर आमंत्रित करती है। ठीक उसी प्रकार हमारे कर्म भी हैं जो अन्याय-उत्पीड़न रूपी अंधकार को समाप्त कर नये परिवर्तन का प्रकाश फैलाते हैं।

2.

नैतिकता हमारे लिए सामाजिक मानदंड उपस्थित करती है क्योंकि यह उचित और अनुचित का ज्ञान कराती है। नैतिक नियमों में चरित्र-निर्माण की महत्ता पर जोर दिया जाता है और उन्हें मानने वाले कर्त्तव्य की भावना से प्रेरित होकर व्यवहार करते हैं। नैतिकता महज इसलिए नहीं मानी जाती कि पूर्वज भी ऐसा मानते आए हैं, बल्कि वह इसलिए मानी जाती है क्योंकि इसके पीछे न्याय, पवित्रता, औचित्य व दृढ़ता होती है। नैतिकता आत्म-चेतना से प्रेरित होती है। रूढ़ियाँ तो तर्कपूर्ण नहीं होती, किन्तु नैतिकता का आधार मनुष्य के जीवन-मूल्य होते हैं जिनके अनुसार वे तर्कों का निर्माण कर लेते हैं। नैतिकता रूढ़ियों व जनरीतियों की अपेक्षा स्थायित्व लिए रहती है। नैतिकता का एक और अर्थ हो सकता है जिसका सम्बन्ध एक समूह विशिष्ट से होता है, जैसे, डॉक्टरों की नैतिकता, प्राध्यापकों की नैतिकता आदि। यह आचारशास्त्र के निकट है। धर्म अक्सर नैतिक सिद्धांतों का समर्थन करता है। नैतिक सिद्धांतों का परिपालन धर्म के भय के कारण होता है, क्योंकि बहुत से नीति-नियमों की उत्पत्ति धर्म से बतलायी गयी है। भारत में कर्म, पुनर्जन्म एवं स्वर्ग-नरक की अवधारणाएँ धर्म द्वारा प्रतिपादित हैं। ये अवधारणाएँ सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होती हैं। यदि व्यक्ति नैतिकता का पालन नहीं करता है तो उसको अपराधी माना जाता है, जबकि धर्म का पालन न करने पर वह पाप का भागी बनता है। आवश्यक नहीं कि सभी प्रकार के नैतिक व्यवहारों की प्रकृति धार्मिक हो।

उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। 5

(ख) धर्म और नैतिकता का संबंध स्पष्ट कीजिए। 5

(ग) गद्यांश का संक्षेपण (लगभग-एक तिहाई शब्दों में) कीजिए। 20

उत्तर-(क)

गद्यांश का उचित शीर्षक है- 'धर्म व नैतिकता'।

उत्तर-(ख)

नैतिकता उचित-अनुचित का ज्ञान कराते हुए हमारे लिए सामाजिक मानदण्ड प्रस्तुत करती है। धर्म प्रायः इन्हीं नैतिक सिद्धान्तों की स्वीकृति देता है। नैतिक सिद्धान्तों का पालन धर्म के भय से किया जाता है। भारत में कर्म, पुनर्जन्म एवं स्वर्ग-नरक की जो अवधारणाएँ निर्मित की गई हैं, उसका उद्देश्य मानव को नैतिक बनाकर समाज में एक बेहतर व्यवस्था बनाना था ताकि सुखद मानवीय जीवन की प्राप्ति हो सके।

उत्तर-(ग) धर्म और नैतिकता

नैतिकता सामाजिक मूल्य है जो हमें सत्य-असत्य का ज्ञान कराते हुए चरित्र-निर्माण को प्रभावित करती है। यह आत्म-चेतना प्रेरित है। धर्म अक्सर नैतिक नियमों का समर्थन करता है। लोग धर्म का पालन भय से करते हैं क्योंकि यदि वह धर्म से विमुख होंगे तो पाप के भागी बन जाएँगे। भारत में कर्म, पुनर्जन्म एवं स्वर्ग-नरक की अवधारणाएँ जो निर्मित की गयी हैं इनका उद्देश्य लोगों को नैतिक बनाकर एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना ही है।

3.

(क) जिला कलेक्टर की ओर से मंडल आयुक्त को एक पत्र लिखिए। इस पत्र में राज्य सरकार द्वारा घोषित 'स्वच्छता-सप्ताह' के दौरान जिले में किये गये विविध कार्यों का विवरण हो। 10

(ख) जिला शिक्षा अधिकारी की ओर से एक आदेश जारी कीजिए। जिसमें श्री राम सिंह, व्याख्याता, गणित, उच्च माध्यमिक विद्यालय 'क' नगर को उच्च माध्यमिक विद्यालय, 'ख' नगर में तत्काल प्रभाव से दो माह की प्रतिनियुक्ति हेतु आदेशित किया गया है। 10

उत्तर-(क)

प्रश्नगत विषय पर आधारित शासकीय पत्र का प्रारूप -

पत्रांक- 15क/13ख/2023-24

प्रेषक,

क. ख. ग.,

जिलाधीश,

प्रयागराज।

सेवा में,

आयुक्त,

प्रयागराज मण्डल,

प्रयागराज।

अनुभाग-1 दि. 26 मार्च, 2023, प्रयागराज

विषय-स्वच्छता सप्ताह के दौरान जनपद स्तर पर किये गये कार्यों के विवरण से सम्बन्धित।

महोदय,

उक्त विषय पर आपको सूचित करने का निदेश हुआ है कि दि. 16 से 22 मार्च 2023 के मध्य जनपद स्तर पर स्वच्छता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस आयोजन में ग्रामीण क्षेत्र विशेष रूप से केन्द्रित थे।

स्वच्छता सप्ताह के दौरान किये गये कार्य-

1. गाँवों में सफाई अभियान चलाया गया और नालियों व गलियों की सफाई की गयी।
2. ग्रामीणों को पीने के पानी के उचित रख-रखाव के लिए जागरूक किया गया।
3. सामाजिक कार्यकर्ता, आँगनबाड़ी, पंचायत प्रतिनिधि, आशा कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी रही।
4. 17 मार्च को जनपद स्तर के विभिन्न स्कूलों में हैण्ड वॉश डे मनाया गया।

भवदीय

.....

(क. ख. ग.)

जिलाधीश।

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित-

1. अनुभाग अधिकारी अभिलेखागार।
2. .....

आज्ञा से

.....

(क. ख. ग.)

जिलाधीश।

उत्तर-(ख)

कार्यालय जिला शिक्षाधिकारी

अनुभाग-2

सं.-12क/13ग/2023-24

दिनाँक- 20 फरवरी, 2023, प्रयागराज

कार्यालय आदेश

श्री राम सिंह व्याख्याता, गणित, उच्च माध्यमिक विद्यालय 'क' नगर को दिनाँक 1 मार्च, 2023 से उच्च माध्यमिक विद्यालय 'ख' नगर में तत्काल प्रभाव से दो माह की प्रतिनियुक्ति प्रदान की गयी है।

2. श्री राम सिंह का पद व वेतनमान पूर्ववत् रहेगा।

ह0.....

(य. र. ल.)

जिला शिक्षाधिकारी

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ प्रेषित-

1. श्री राम सिंह, व्याख्याता, गणित।
2. प्रतिलिपि सूचना पटल पर चस्पा हेतु।
3. प्राचार्य उच्च माध्यमिक विद्यालय 'क' नगर।
4. प्राचार्य उच्च माध्यमिक विद्यालय 'ख' नगर।

आज्ञा से

ह0 .....

(य. र. ल.)

जिला शिक्षाधिकारी।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए। 10

मसृण, त्याज्य, उद्धत, ज्ञेय, पाच्य, प्रखर, धृष्ट, संघटन, अभिज्ञ, अनिवार्य

उत्तर-

शब्द		**विलोम**
मसृण	-	रूक्ष
त्याज्य	-	ग्राह्य
उद्धत	-	विनत
ज्ञेय	-	अज्ञेय
पाच्य	-	अपाच्य
प्रखर	-	मंद
धृष्ट	-	विनम्र
संघटन	-	विघटन
अभिज्ञ	-	अनभिज्ञ
अनिवार्य	-	वैकल्पिक/ऐच्छिक

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश कीजिए। 5

पर्यटन, प्रतीक्षा, अन्वेषण, निरूपण, अध्यक्ष

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को पृथक् कीजिए। 5

वैष्णव, ग्रामीण, वाणिज्य, गड़रिया, कौन्तेय

उत्तर-5 (क) :

शब्द		**उपसर्ग**
पर्यटन	-	परि
प्रतीक्षा	-	प्रति
अन्वेषण	-	अनु
निरूपण	-	नि
अध्यक्ष	-	अधि

उत्तर-5 (ख) :

शब्द		प्रत्यय
वैष्णव	-	अ
ग्रामीण	-	ईन
वाणिज्य	-	य
गड़रिया	-	इया
कौन्तेय	-	एय

6. निम्नलिखित वाक्यांशों या पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए। 10

(1) अनिश्चित जीविका।

(2) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक।

(3) चार अंगों वाली सेना।

(4) पेट की आग।

(5) दूसरों के दोष निकालने की जिसकी प्रवृत्ति हो।

उत्तर-

(1) अनिश्चित जीविका **आकाशवृत्ति**

(2) बच्चों से लेकर बूढ़ों तक **आबालवृद्ध**

(3) चार अंगों वाली सेना **चतुरंगिणी**

(4) पेट की आग **जठराग्नि**

(5) दूसरों के दोष निकालने की जिसकी प्रवृत्ति हो **छिन्द्रान्वेषी**

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। 5

(1) जीवन और साहित्य का घोर संबंध है।

(2) इतने में हल्की सी हवा का झोंका आया।

(3) जंगली फल और झरनों का पानी पीकर हम आगे बढ़े।

(4) सीता ने माला गूँध ली।

(5) उसने अपने पाँव से जूता निकाला।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए। 5

वाल्मीकी, अन्ताक्षरी, संग्रहित, हष्ट पुष्ट, धुरंदर

उत्तर-7 (क) शुद्ध वाक्य-

(1) जीवन और साहित्य का घनिष्ठ संबंध है।

(2) इतने में हवा का हल्का सा झोंका आया।

(3) जंगली फल खाकर और झरनों का पानी पीकर हम आगे बढ़े।

(4) सीता ने माला गूँथ ली।

(5) उसने अपने पाँव से जूता उतारा।

उत्तर-7 (ख)

अशुद्ध		शुद्ध
वाल्मीकी	-	वाल्मीकि
अन्ताक्षरी	-	अन्त्याक्षरी
संग्रहित	-	संगृहीत
हष्ट पुष्ट	-	हृष्ट-पुष्ट
धुरंदर	-	धुरंधर

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए और उनका वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाये। 10+20=30

(1) बिल्ली के गले में घंटी बाँधना।

(2) कुएँ में भाँग पड़ना।

(3) उड़ती चिड़िया के पंख गिनना।

(4) बहती गंगा में हाथ धोना।

(5) डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना।

(6) दमड़ी की हाँड़ी गई कुत्ते की जात पहचानी गई।

(7) नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

(8) थोथा चना बाजे घना।

(9) छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

(10) जहाँ देखे तवा परात वहीं गुजारे सारी रात।

उत्तर-

(1) बिल्ली के गले में घंटी बाँधना- कठिन कार्य सम्पन्न करना

वाक्य प्रयोग- आज अपराधियों का राजनीतिकरण हो चुका है। किसी प्रशासनिक अधिकारी द्वारा इन्हें पकड़ने का साहस करना बिल्ली के गले घंटी बाँधने के समान है।

(2) कुएँ में भाँग पड़ना- सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना।

वाक्य प्रयोग-अँधविश्वासों की समाप्ति हेतु सरकार द्वारा कानून बनाए जाने को लेकर लोगों द्वारा विरोध किए जाने पर ऐसा प्रतीत होता है कि कुएँ में भाँग पड़ी है।

(3) उड़ती चिड़िया के पंख गिनना-कठिन या असम्भव कार्य करना।

वाक्य प्रयोग-मौर्य साम्राज्य की स्थापना में चाणक्य ने राजनीतिक दक्षता तथा चातुर्य से काम लिया। वे उड़ती चिड़िया के पंख भी गिनने में सक्षम थे।

(4) बहती गंगा में हाथ धोना-अवसर का लाभ उठाना।

वाक्य प्रयोग-आपदाओं के समय कानून व्यवस्था बिगड़ जाने से लूट-पाट की घटनाएँ बढ़ जाती हैं। समाज के प्रतिष्ठित लोग भी बहती गंगा में हाथ धोने में लग जाते हैं।

(5) डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना-बहुमत से अलग रहना।

वाक्य प्रयोग-समाज सामूहीकरण की प्रवृत्ति से निर्मित होता है इससे इतर डेड़ चावल की खिचड़ी पकाने वाले लोग अलग-थलग पड़ जाते हैं।

(6) दमड़ी की हाँड़ी गई कुत्ते की जात पहचानी गई-थोड़े से ही नुकसान द्वारा धोखेबाज की पहचान होना।

वाक्य प्रयोग-पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान को 1996 में दिये गये 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' का दर्जा समाप्त कर सीमा शुल्क में ढील देना बंद कर दिया। इस पर भारतीय राजनीतिज्ञों ने कहा ठीक ही हुआ कि दमड़ी की हाँड़ी गई कुत्ते की जात पहचानी गई।

(7) नाच न जाने आँगन टेढ़ा-गुणहीन का बहाना बनाना।

वाक्य प्रयोग-संगीत के एक मंच पर मोहन द्वारा गाने से यह कह कर मना कर दिया गया कि वाद्य यंत्र ठीक नहीं हैं, वास्तव में नाच न जाने आँगन टेढ़ा की कहावत को चरितार्थ करता है।

(8) थोथा चना बाजे घना-गुण से ज्यादा दिखावा।

वाक्य प्रयोग-आज जनता समझदार हो गयी है। राजनेताओं के प्रलोभनों और झूठे वादों के संबंध में वह निश्चित हो चुकी है कि थोथा चना बाजे घना।

(9) छछूँदर के सिर में चमेली का तेल-अयोग्य के पास गुणवान वस्तु।

वाक्य प्रयोग-उत्तरवर्ती मुगल काल में विलासप्रिय राजकुमारों का उत्तराधिकार में सत्ता प्राप्त करना, छछूँदर के सिर में चमेली का तेल वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

(10) जहाँ देखे तवा परात वहीं गुजारे सारी रात-लोभी या लालची मनुष्य।

वाक्य प्रयोग-निर्दलीय सदस्य मंत्री बनने की लालच में सरकार का समर्थन करते हैं। इनके सम्बन्ध में जहाँ देखें तवा परात वहीं गुजारे सारी रात की कहावत सटीक उतरती है।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा, 2023

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट/Note :

(i) प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड से केवल एक–एक विषय का चयन कर कुल तीन निबंध हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा उर्दू भाषा में लिखिए।/The Question paper is divided into three Sections. Write three essays in Hindi or English or Urdu language, selecting one topic from each section.

(ii) प्रत्येक निबंध में कुल प्रयुक्त शब्दों की अधिकतम सीमा 700 शब्दों की है।/Words limit each essay is 700 words.

(iii) प्रत्येक निबंध के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।
Each essay carries 50 marks.

खण्ड-अ/Section-A

1. चरित्र निर्माण में साहित्य की भूमिका।
Role of literature in character building.
2. महानगरों में वृद्धों की समस्या।
The problem of old people in metropolitan cities.
3. भारत के लिए जी-20 के नेतृत्व के निहितार्थ।
Meaning of G-20 leadership for India.

खण्ड-ब/Section-B

1. अंतरिक्ष विज्ञान और भारत।
Space science and India.
2. कृषि क्षेत्र में नयी संभावनाएँ।
New possibilities in the agricultural sector.
3. भूमण्डलीकरण और कुटीर उद्योग।
Globalization and cottage industry.

खण्ड-स/Section-C

1. श्रीलंका में आये आर्थिक संकट का पूरे विश्व पर प्रभाव।
The effect of economic crisis in Sri Lanka on whole world.
2. पिघलते ग्लेशियरों का मनुष्य जाति के सामने संकट।
Melting glaciers danger for human beings.
3. प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान।
P. M. Annadata Aay Sanrakashan Abhiyan.

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस मुख्य परीक्षा, 2022

सामान्य हिन्दी

निर्धारित समय : तीन घंटे | **अधिकतम अंक : 150**
Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंत में निर्धारित अंक अंकित हैं।
(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य किसी का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग उल्लेख कर सकते हैं।

1. निम्नलिखित गंद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जीवन को उसकी समग्रता में सोचना और जीवन को एक ख़ास इरादे से सोचना दो अलग तरह की तैयारियाँ हैं और इस माने में साहित्य जब भी राजनीति की तरह भाषा का एकतरफा या इकहरा इस्तेमाल करता है, तो वह अपनी मूल शक्ति को सीमित या कुंठित करता है। राजनीति के मुहावरे में बोलते समय हम एक ऐसे वर्ग की भाषा बोल रहे होते हैं जिसके लिए भाषा प्रमुख चीज़ नहीं है, वह भाषा का दूसरे या तीसरे दर्जे का इस्तेमाल है : वह एक खास मकसद तक पहुँचने का साधन मात्र है। उसे भाषा की सामर्थ्य, प्रामणिकता या सचाई में उस तरह दिलचस्पी नहीं रहती जिस तरह साहित्य की। उसकी भाषा प्रचार-प्रमुख रेटारिकल और नकली व्यक्तित्व की भाषा हो सकती है, क्योंकि राजनीति के लिए भाषा एक व्यावहारिक और कामचलाऊ चीज़ है जबकि साहित्यकार के लिए भाषा उस जिंदगी की सचाई का एक जीता-जागता हिस्सा है जिसे वह राजनीतिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक या स्वार्थों की हिंसा, तोड़-फोड़ और प्रदूषण से बचा करके उसकी मूल गरिमा और शक्ति में स्थापित या पुनर्स्थापित करना चाहता है। साहित्य का काम अपनी पहचान को राजनीति की भाषा में खो देना नहीं, बल्कि उस भाषा के छद्म से अपने को लगभग बेगाना करके अकेला कर लेना है, एक सन्त की तरह अकेला, कि राजनीति की लिए जरूरी हो जाए कि वह बारबार अपनी प्रामणिकता और सचाई के लिए साहित्य से भाषा माँगे न कि साहित्य ही राजनीति की भाषा बनकर अपनी पहचान खो दे।

(क) प्रस्तुत गद्य का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) राजनीति की भाषा का लक्ष्य क्या होता है?

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- (क)

जीवन को उसकी --------- पहचान खो दे।

भावार्थ-

साहित्यकार भाषा को सभी स्वार्थों और विसंगतियों से बचाते हुए उसे उसकी शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता है। साहित्य मात्र राजनीति की भाषा नहीं है, बल्कि राजनीति साहित्य से भाषा की माँग करे यह आवश्यक है। राजनीति भाषा का एकांगी प्रयोग करती है, उसे भाषा के अर्थ गाम्भीर्य से कोई मतलब नहीं है। राजनीति के लिए भाषा सिर्फ स्वार्थ पूर्ति का माध्यम है। साहित्यिक भाषा का सामर्थ्य राजनीतिक भाषा निर्धारित नहीं कर सकती है।

उत्तर-(ख)

राजनीति की भाषा का लक्ष्य एक खास मकसद तक पहुँचना होता है। उसके लिए भाषा एक व्यावहारिक और कामचलाऊ माध्यम होती है जो उसके स्वार्थ पूर्ति में सहायक की भूमिका निभाती है। राजनीति को भाषा की प्रामाणिकता या सत्यता में कोई दिलचस्पी नहीं होती है।

उत्तर-(ग)

रेखांकित पक्तियों की व्याख्या-

(i) साहित्य जब.....कुंठित करता है।

व्याख्या- उक्त व्याख्येय पंक्ति के माध्यम से लेखक साहित्य की मूल शक्ति और क्षमता को कुंठित या सीमित करने के कारण के रूप में राजनीति की तरह भाषा के एकांगी प्रयोग को उत्तरदायी बताता है। साहित्य की भाषा अपने-आप में समग्रता को धारण किये होती है, किन्तु जब यह राजनीति की भाषा बनती है तो उसकी समग्रता धूमिल होने लगती है। इसलिए साहित्य को भाषा का प्रयोग राजनीति की तरह एकतरफा न करके उसकी मूल शक्ति और सामर्थ्य के रूप में करना चाहिए।

(ii) उसे भाषा.....साहित्य की।

व्याख्या- उक्त पंक्ति के माध्यम से लेखक का कहना है कि भाषा की सामर्थ्य, सत्यता या प्रामाणिकता का महत्व जितना साहित्य के लिए है, राजनीति के लिए उतना नहीं है। भाषा की प्रामाणिकता ही एक उत्कृष्ट साहित्य और साहित्यकार को जन्म देती है। भाषा के माध्यम से ही साहित्य सत्य का संभाषण कहता है किन्तु राजनीति भाषा की सामर्थ्य एवं सत्यता के बजाय उसके साथ एकतरफा व्यवहार करते हुए भाषा का प्रयोग मात्र स्वार्थ पूर्ति तथा बनावटी व्यक्तित्व को प्रकट करने का माध्यम बन कर रह जाती है।

(iii) साहित्यकार.....चाहता है।

व्याख्या- उक्त पंक्ति के माध्यम से लेखक कहता है कि भाषा किसी साहित्यकार के लिए उस सत्य की भाँति है जिसे वह किसी भी दशा में उसके मूलरूप में स्थापित करना चाहता है। जिस प्रकार जीवन की सत्यता का मनुष्य अपने जीवन में आने वाली विसंगतियों, दुर्गुणों इत्यादि से बचाकर पुनर्स्थापित करता है, उसी प्रकार साहित्यकार भी भाषा के प्रकटीकरण में आने वाली बाधाओं, चाहे वह राजनीतिक स्तर की हो, या फिर व्यावहारिक जीवन की, सबको दरकिनार कर उसके खो चुके स्वरूप को पुनर्स्थापित करता है। पूर्वाग्रह, स्वार्थ सिद्धि या फिर असत्य का सम्भाषण साहित्यिक भाषा का गुण नहीं बल्कि पूर्वाग्रह रहित होकर परहित की भावना साहित्य का मूल है जिसे वह भाषा के माध्यम से ही प्रकट करता है। अतः भाषायी गरीमा तथा प्रमाणिकता भाषा के आवश्यक तत्व है।

2.

भारत में अपना समाजशास्त्र रचने की आवश्यकता है। पश्चिम का समाजशास्त्र जिस मानव-केन्द्रित सामाजिकता और उसकी आधारभूत समता की बात करता है, वह किंचित् अपर्याप्त है। मनुष्य तक ही जीवन की सीमा नहीं है। मनुष्य जब अपने आसपास के चर-अचर जीवन के साथ ओतप्रोत है, आसपास की क्षति से जब उसकी भी क्षति होती है, तो उसका दायित्व तो बढ़ जाता है। यह सही है कि जिस प्रकार की तर्क-प्रज्ञा मनुष्य को प्राप्त है, वह अन्य प्राणी को नहीं; पर उस अन्य को भी कुछ ऐसा प्राप्त है, जो मनुष्य को नहीं- और उस अप्राप्त के प्रति मनुष्य को श्रद्धा होनी चाहिए। हमारा संगठन उनकी सत्ता को नकारकर या हेय मानकर होगा; जैसा पिछले तीन सौ वर्षों से हुआ है, तो यह जितनी उनकी क्षति करेगा उससे अधिक मनुष्य की क्षति होगी, यह बात तो अब प्रमाणित हो चुकी है। इसलिए समाजशास्त्र की मानव-केन्द्रित दृष्टि का ध्यान सर्वभूतहित पर जाना चाहिए। दूसरी बात समता की है। सम शब्द का व्युत्पत्ति से प्राप्त अर्थ-जो सत् मात्र हो, अर्थात् शुद्ध सत्ता हो, इसलिए समता को अर्थात् शुद्ध समता को सर्वत्र देखना। समता इस प्रकार एकत्व है, एकत्व बुद्धि है, बराबरी नहीं हैं, क्योंकि पृथकत्व के बिना बराबरी की बात ही नही सोची जा सकती, दो वस्तुएँ अलग होंगी, तभी वे बराबर या गैर-बराबर दिखेंगी, जब एक हैं तो फिर बराबरी या गैर-बराबरी का सवाल ही नहीं उठता।

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(ख) नए भारतीय समाजशास्त्र, की रचना की आवश्यकता क्यों है?

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए।

उत्तर- (क)

प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है-

'नवीन भारतीय समाजशास्त्र'

उत्तर-(ख)

पाश्चात्य समाजशास्त्र मानव को केन्द्र में रखकर उससे जुड़ी गतिविधियों की ही बात करता है। ऐसे में मानव जीवन को प्रभावित करने वाले और उनसे प्रभावित होने वाले प्राणियों की उपेक्षा होती है। चूँकि मनुष्य अपने आस-पास के चर-अचर जीवन से ओतप्रोत है। अतः वर्तमान समय में मानव के साथ-साथ उसके आस-पास के चर-अचर जीवन को केन्द्रीय महत्व प्रदान करने हेतु नए भारतीय समाजशास्त्र की आवश्यकता है जिसमें सभी का हित समाहित हो।

उत्तर-(ग)

संक्षेपण-

'नवीन भारतीय समाजशास्त्र'

नवीन भारतीय समाजशास्त्र की रचना आज आवश्यक हो गयी है क्योंकि पाश्चात्य समाजशास्त्र केवल मानव केन्द्रित है। समाज में रहते हुए मनुष्य अपने आस-पास के पर्यावरण से प्रभावित होता रहता है। ऐसे में अपने आस-पास के चर-अचर जीवन की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः नवीन समाजशास्त्र सबके हित तथा समता पर केन्द्रित होना चाहिए। बौद्धिक स्तर पर समता के साथ व्यावहारिक स्तर पर अलगाव भी आवश्यक है तभी समता और विषमता का निर्धारण किया जा सकता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) अधिसूचना किसे कहते हैं? हिन्दी प्रदेश के न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग को अनिवार्य करने की एक अधिसूचना विधि मंत्रालय द्वारा दी गई है। उसका उपयुक्त प्रारूप तैयार कीजिए।

(ख) परिपत्र किसे कहते हैं? जिला अधिकारी की ओर से जिले के सभी ग्राम प्रधानों के लिए सफाई व्यवस्था पर ध्यान रखने के लिए एक परिपत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर-(क)

परिभाषा- अधिसूचना आलेखन का वह प्रारूप होता है, जिसके माध्यम से लोक विषयक महत्वपूर्ण मामलों, शासकीय निर्णयों, सूचनाओं एवं अन्य सांविधिक आदेशों को सर्व साधारण के सूचनार्थ जारी किया जाता है, जिसका प्रकाशन गजट में अनिवार्य रूप से किया जाता है।

विधि मंत्रालय, भारत सरकार

अनुभाग -1

सं.-12क/2 च/ 2022-23

दि.- 20 जनवरी, 2022, नई दिल्ली

अधिसूचना/भाषायी अनिवार्यता

विधि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिन्दी प्रदेश के न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग को अनिवार्य किये जाने का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों तक न्याय की पहुँच को सुनिश्चित करने वाला है

2. उक्त निर्णय 1 फरवरी, 2023 से प्रभावी होगा

आज्ञा से

ह०.....

(क. ख. ग)

सचिव।

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित-

1. अनुभाग अधिकारी, अभिलेखागार।
2. अनुभाग अधिकारी, प्रकाशन अनुभाग।
3. प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु।

आज्ञा से

ह०.....

(क. ख. ग)

सचिव।

उत्तर-(ख)

परिभाषा- पत्र अलेखन का वह औपचारिक प्रारूप, जिसके माध्यम से शासकीय नीतियों, निर्णयो, आदेशों, वार्ता-बैठक, विचार-विमर्श से सम्बन्धित सूचनाओं को विषय बनाकर एक साथ कई प्रेषितियों को प्रतिलिपि के माध्यम से प्रेषित किया जाता है, परिपत्र कहलाता है।

संख्या- 10क/12च/2022-23

प्रेषक,

क. ख. ग.,
जिलाधिकारी,
प्रयागराज।

सेवा में,

समस्त ग्राम सचिव,
प्रयागराज,
उत्तर प्रदेश।

अनुभाग-1 दि-20 जनवरी, 2023, प्रयागराज

विषय- गाँवों की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने हेतु ग्राम प्रधानों को परिपत्र।

महोदय,

उक्त विषय में आपको निदेशित है कि ग्रामीण परिवेश को साफ-सुथरा रखना अति आवश्यक है। इस आशय हेतु ग्राम प्रधानों की एक बैठक आयोजित करते हुए गाँव की सफाई व्यवस्था पर ध्यान रखने हेतु जागरुकता अभियान चलाया जाए ताकि गाँव के लोगों के स्वस्थ्य के साथ-साथ ग्रामीण परिवेश की स्वच्छता तो भी सुनिश्चित किया जा सके।

2. उक्त का अनुपालन तत्काल प्रभाव से सुनिश्चित करते हुए कार्यालय को सूचित करें।

भवदीय

ह०.....

(क. ख. ग.)

जिलाधिकारी।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।

विपन्न, महत्ता, स्तुत्य, सद्भाव, विरल, शीर्ष, समष्टि, अपराधी, अवशेष, एकत्र

उत्तर-शब्द	**विलोम**
विपन्न	सम्पन्न
महत्ता	लघुता
स्तुत्य	निन्द्य
सद्भाव	दुरभाव
विरल	सघन
शीर्ष	तल
समष्टि	व्यष्टि
अपराधी	निरपराध
अवशेष	निःशेष
एकत्र	विकीर्ण

5.

(क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश कीजिए।

उद्ग्रीव, दुर्दशा, निमीलित, निश्चल, अत्यंत

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग कीजिए

देव, पूज्य, कौन्तेय, पौराणिक, तन्द्रालु

उत्तर-(क)

शब्द	**उपसर्ग**
उद्ग्रीव	उत्
दुर्दशा	दुर्
निमीलित	नि
निश्चल	निश्
अत्यंत	अति

उत्तर-(ख)

शब्द	**प्रत्यय**
देव	अ
पूज्य	य
कौन्तेय	एय
पौरणिक	इक
तन्द्रालु	लु

6. निम्नलिखित वाक्यांशों या पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(1) जो जुड़ा या मिला न हो।

(2) अपना पेट भरने वाला।

(3) जिस पर विश्वास किया गया है।

(4) जिसका रोकना कठिन हो।

(5) तैरकर पार करने की इच्छा वाला।

उत्तर- वाक्यांश या पदबंधों के लिए एक शब्द –

(1) जो जुड़ा या मिला न हो	–	**पृथक्**
(2) अपना पेट भरने वाला	–	**उदरंभरि**
(3) जिस पर विश्वास किया गया है	–	**विश्वस्त**
(4) जिसका रोकना कठिन हो	–	**दुर्निवार्य**
(5) तैरकर पार करने की इच्छा वाला	–	**तितीर्षु**

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

(1) तुम्हारे हर काम गलत होते हैं।

(2) दंगे में कई निरपराधी व्यक्ति मारे गए।

(3) तुम कौन गाँव में रहते हो?

(4) यह बात उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है।

(5) प्रेमचन्द अच्छी कहानी लिखे हैं।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए।

अनुसूइया, वहिर्गमन, मध्यान्ह, प्रज्ज्वल, कृशांगिनी

उत्तर-(क) वाक्यों के शुद्ध रूप निम्नलिखित हैं–

1. तुम्हारा हर काम गलत होता है।
2. दंगे में कई निरपराध व्यक्ति मारे गये।
3. तुम किस गाँव में रहते हो।
4. यह बात उदाहरण से स्पष्ट की जा सकती है।
5. प्रेमचन्द ने अच्छी कहानियाँ लिखी हैं।

(ख) वर्तनी का संशोधित रूप निम्नलिखित है–

अशुद्ध	**शुद्ध**
अनुसूइया	अनसूया
वहिर्गमन	बहिर्गमन
मध्यान्ह	मध्याह्न
प्रज्ज्वल	प्रज्वल
कृशांगिनी	कृशांगी

8. निम्नलिखित मुहारों/ लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(1) चूहे के चाम से नगाड़ा नहीं बनता

(2) खूँटे के बल बछड़ा कूदे।

(3) दालभात में मूसरचंद।

(4) पराए धन पर लक्ष्मीनारायण।

(5) एक ही लकड़ी से सबको हाँकना।

(6) अधजल गगरी छलकत जाए।

(7) लहू के आँसू पीना।

(8) मीठी छुरी चलाना।

(9) निन्यानबे के फेर में पड़ना।

(10) जबान में लगाम न देना।

उत्तर : मुहावरे एवं लोकोक्तियों के अर्थ व प्रयोग –

(1) चूहे के चाम से नगाड़ा नहीं बनता।

अर्थ- सीमित संसाधनो से बड़ा काम नहीं होता।

वाक्य प्रयोग- पर्याप्त पुस्तकों के अभाव में बहुत से विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर देते हैं। किन्तु यदि उन्हें सफलता अर्जित करनी है तो यह समझना होगा कि चूहे के चाम से नगाड़ा नहीं बनता।

(2) खूँटे के बल पर कूदना।

अर्थ- दूसरे के बल पर अभिमान करना।

वाक्य प्रयोग- वर्तमान समय में चीन पाकिस्तान का आर्थिक सहायक बना हुआ है। इसलिए वैश्विक पटल पर पाकिस्तान खूँटे के बल पर कूदता रहता है।

(3) दालभात में मूसलचंद।

अर्थ- बीच में दखल देने वाला।

वाक्य प्रयोग- सुरक्षा परिषद में भारत जब भी आतंकवाद पर प्रतिबन्ध लगाने और शांति बहाली की बात करता है तो पाकिस्तान सदैव दालभात में मूसलचन्द बन जाता है।

(4) पराए धन पर लक्ष्मी नारायण।

अर्थ- दूसरे के धन पर अधिकार जमाना।

वाक्य प्रयोग- वर्तमान समय में हमारे आस-पास बहुत से व्यक्ति धन-लोलुप प्रकृति के मिल जाते हैं। ऐसे व्यक्ति आपराधिक स्वाभाव के साथ-साथ पराए धन पर लक्ष्मीनारायण बनने वाले होते हैं।

(5) एक ही लकड़ी से सबको हाँकना।

अर्थ- सबको एक समान समझना।

वाक्य प्रयोग- हमारी शिक्षा प्रणाली में बहुत से शिक्षक ऐसे पाये जाते हैं जो सभी विद्यार्थियों के प्रति एक लकड़ी से सबको हाँकने वाली प्रवृत्ति अपनाये हुए हैं। ऐसे में बौद्धिक रूप से कमजोर विद्यार्थी का विकास आशा के अनुरूप नहीं हो पाता है।

(6) अधजल गगरी छलकत जाए।

अर्थ- अल्पज्ञानी का बड़बोलापन।

वाक्य प्रयोग- कतिपय लोग इतिहास की भ्रामक बातों और आधे-अधूरे ज्ञान के कारण महात्मा गाँधी जी पर व्यर्थ टिप्पणियाँ करते रहते हैं, जबकि उनमें वास्तविक ज्ञान का अभाव होता है। ऐसे लोग अधजल गगरी छलकत जाए वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं।

(7) लहू के आँसू पीना।

अर्थ- क्रोध सह जाना।

वाक्य प्रयोग- राष्ट्रवादी नेता भारत का विभाजन नहीं चाहते थे। भारत के विभाजन से उनकी अखण्ड भारत की संकल्पना धरी-की- धरी रह गयी और वे लहू के आँसू पीकर रह गये।

(8) मीठी छुरी चलाना।

अर्थ- विश्वासघात करना।

वाक्य प्रयोग- मित्रता का दिखावा करने वाले व्यक्तियों से मनुष्य को सदैव सावधान रहना चाहिए क्योंकि ऐसा व्यक्ति मीठी छुरी चलाने में माहिर होता है।

(9) निन्यानबे के फेर में पड़ना।

अर्थ- धन कमाने में लगे रहना।

वाक्य प्रयोग- वर्तमान समय में व्यक्ति केवल निन्यानबे के फेर में पड़ा रहता है। ऐसे में न तो वह अपने परिवार को समय दे पाता है और न ही उसका सामाजिक विकास हो पाता है।

(10) जबान में लगाम न देना।

अर्थ- अनावश्यक रूप से बोलना।

वाक्य प्रयोग- भारतीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में अक्सर यह देखने को मिलता है कि कुछ वाचाल प्रवृत्ति के क्षेत्रीय और छोटे स्तर के नेताओं द्वारा जबान में लगाम न देने के कारण पार्टी प्रवक्ताओं को माफी माँगनी पड़ती है।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा, 2022
निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट/Note :

(i) प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड से केवल एक–एक विषय का चयन कर कुल तीन निबंध हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा उर्दू भाषा में लिखिए।/The Question paper is divided into three Sections. Write three essays in Hindi or English or Urdu language, selecting one topic from each section.

(ii) प्रत्येक निबंध में कुल प्रयुक्त शब्दों की अधिकतम सीमा 700 शब्दों की है।/Words limit each essay is 700 words.

(iii) प्रत्येक निबंध के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।
Each essay carries 50 marks.

खण्ड-अ/Section-A

1. उत्कृष्ट साहित्य के नए मानक।
   New standard for the excellent literature.
2. द्विखण्डी व्यक्तित्व में बँटी नारी।
   Women divided in double personality.
3. बेरोजगारी निवारण में शिक्षा की भूमिका।
   Role of Education in the eradication of unemployment

खण्ड-ब/Section-B

1. अंध उद्योगीकरण पर्यावरण प्रदूषण का स्रोत है।
   Blind industrialization is source of Environmental Pollution.
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका।
   Contribution of Agriculture in the Indian Economy
3. बढ़ती क्षेत्रीयता और राष्ट्रीय एकता।
   Increasing Regionalism and National Unity.

खण्ड-ग/Section-C

1. जनधन योजना : गरीबों का सारथी।
   Jan-Dhan Scheme is the charioteer of poors.
2. जल संरक्षण के लिए नदी-संयोजन आज की माँग।
   For water preservation river co-ordination is demand of todays.
3. दूरदर्शन अपसंस्कृति की अगुवाई कर रहा है।
   Television is leading bad-culture.

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस मुख्य परीक्षा, 2021

सामान्य हिन्दी

निर्धारित समय : तीन घंटे | **अधिकतम अंक : 150**
Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंत में निर्धारित अंक अंकित हैं।
(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य किसी का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग उल्लेख कर सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

किसी परिमित वर्ग से कल्याण से सम्बन्ध रखने वाले धर्म की अपेक्षा विस्तृत जनसमूह के कल्याण से सम्बन्ध रखने वाला धर्म, उच्च कोटि का है। धर्म की उच्चता उसके लक्ष्य के व्यापकत्व के अनुसार समझी जाती है। गृहधर्म या कुल धर्म से समाज धर्म श्रेष्ठ है, समाज-धर्म से लोकधर्म, लोकधर्म से विश्वधर्म, जिसमें धर्म अपने शुद्ध और पूर्ण स्वरूप में दिखाई पड़ता है। यह पूर्ण धर्म अंगी है और शेष धर्म अंग। पूर्ण धर्म, जिसका सम्बन्ध अखिल विश्व की स्थिति रक्षा से है, वस्तुतः पूर्ण पुरुष या पुरुषोत्तम में ही रहता है, जिसकी मार्मिक अनुभूति सच्चे भक्तों को ही हुआ करती है, इसी अनुभूति के अनुरूप उनके आचरण का भी उत्तरोत्तर विकास हो जाता है। गृह धर्म पर दृष्टि रखने वाला, लोक या समस्त या किसी परिवार की रक्षा देखकर, वर्ग धर्म पर दृष्टि रखने वाला, किसी वर्ग या समाज की रक्षा देखकर और लोक धर्म पर दृष्टि रखने वाला लोक या समस्त मनुष्य-जाति की रक्षा देखकर आनन्द का अनुभव करता है। पूर्ण या शुद्ध धर्म का स्वरूप सच्चे भक्त ही अपने और दूसरों के सामने लाया करते हैं, जिनके भगवान पूर्ण धर्म स्वरूप हैं, अतः ये कीटपतंग से लेकर मनुष्य तक सब प्राणियों की रक्षा देखकर आनन्द प्राप्त करते हैं। विषय की व्यापकता के अनुसार उनका आनन्द भी उच्च कोटि का होता है। उच्च से उच्च भूमि के धर्म का आचरण अत्यन्त साधारण कोटि का हो सकता है। इसी प्रकार निम्न भूमि के धर्म का आचरण उच्च से उच्च कोटि का हो सकता है। गरीबों का गला काटने वाले चीटियों के बिलों पर आटा फैलाते देखे जाते हैं, अकाल-पीड़ितों की सहायता में एक पैसा चन्दा न देने वाले अपने डूबते मित्र को बचाने के लिए प्राण संकट में डालते देखे जाते हैं।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
(ख) धर्म समाज कल्याण कैसे करता है? इसे गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- (क) भावार्थ-

लोक-कल्याण की भावना ही किसी भी धर्म को श्रेष्ठतम रूप प्रदान करती है क्योंकि यह अन्य धर्मों की अपेक्षा अपने शुद्धतम एवं पूर्णतम स्वरूप में स्थापित होती है। यही पूर्णता सभी धर्मों का मूल है। लोक कल्याण की भावना पूर्ण पुरुष में ही विद्यमान होती है, जिसकी मार्मिक अनुभूति सच्चे भक्तों के सदाचरण में उत्तरोत्तर वृद्धि का माध्यम बनती है, सीमित दृष्टि रखने वाले धर्म में कल्याण की भावना भी सीमित होती है, जबकि पूर्ण धर्म समष्टि के कल्याण से आनन्दित होता है। पूर्ण या लोक धर्म का प्रकटीकरण सच्चे साधकों द्वारा ही सम्भव है। उच्च या निम्न कोटि की भूमि धर्म के आचरण का निर्धारण नहीं कर सकती है। वर्तमान समय में धर्म सदाचरण का नहीं बल्कि दिखावे की विषय-वस्तु बन कर रह गया है।

उत्तर- (ख)

धर्म मनुष्यों में ऐसे गुणों का विकास करता है जिसका सम्बन्ध मानवता की स्थापना और अखिल विश्व की रक्षा से है। धर्म मनुष्यों में सदाचार एवं परोपकार जैसे गुणों के विकास के माध्यम से समाज कल्याण के कार्य को करने की प्रेरणा देता है। धर्म वैयक्तिक स्वार्थों और हितों की अपेक्षा समाज के हित की बात करता है। धर्म समष्टि के कल्याण की बात करता है। इस प्रकार धर्म व्यक्ति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को जागरित कर समाज कल्याण का कार्य करता है।

उत्तर- (ग)

रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या–

(1) किसी परिमित ..... कोटि का है।

व्याख्या– उक्त रेखांकित पंक्ति के माध्यम से लेखक ने सीमित वर्ग के कल्याण से सम्बन्धित धर्म की तुलना में व्यापक जन समूह के कल्याण से सम्बन्धित धर्म को श्रेष्ठ बताया है। लेखक का मानना है कि समष्टि मूलक धर्म से अधिकतम व्यक्तियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है और जन-जन का कल्याण सम्भव होता है। सीमित वर्ग से सम्बन्धित धर्म, क्षेत्र विशेष के कल्याण की बात करता है तथा दूसरे वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले धर्म के प्रति लोगों में विभिन्न प्रकार की संकीर्णताओं का विकास भी करता है। जबकि विस्तृत जनसमूह से सम्बन्ध रखने वाला धर्म, मानवता की स्थापना पर बल देते हुए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' जैसी भावना को बल प्रदान करता है। इसलिए लेखक ने समष्टि मूलक धर्म को उच्च कोटि का बताया है।

(2) पूर्ण धर्म ..... में ही रहता है।

व्याख्या– उक्त रेखांकित पंक्ति के माध्यम से लेखक पूर्ण धर्म का सम्बन्ध सम्पूर्ण जगत की रक्षा से स्थापित करते हुए उसे पुरुषों में उत्तम अर्थात् पुरुषोत्तम में व्याप्त बताता है। पूर्ण धर्म को आत्मसात् करने वाला पुरुष ही विश्व रक्षा हेतु प्रतिबद्ध होता है। विश्व के समस्त प्राणियों का कल्याण ही उसके जीवन का निहितार्थ होता है। पूर्ण पुरुष सहनशील, धैर्यवान, दयालु, मित्रवत और नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों से परिपूर्ण होता है। इन्हीं गुणों के आधार पर वह पूर्ण धर्म को सम्पूर्ण जगत के समक्ष स्थापित करता है और कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। पूर्ण पुरुष के रूप में भगवान राम को देखा जा सकता है जिन्होंने लोक धर्म की स्थापना करते हुए विश्व-कल्याण का कार्य किया।

(3) गरीबों का ..... देखे जाते हैं।

व्याख्या– प्रस्तुत रेखांकित पंक्ति के माध्यम से लेखक ने ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जो परोपकारिता और दयालुता का झूठा दिखावा करते हैं। धर्म का आवरण ओढ़कर एक तरफ तो वे चींटी जैसे छोटे जीव पर दया करने का दिखावा करते हैं तो दूसरी तरफ गरीबों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं। संकटग्रस्त व्यक्तियों की सहायता न करके वे केवल अपनों के संकट निवारण हेतु तत्पर

दिखाई देते हैं। वे केवल अपना स्वार्थ साधने के लिए ऐसे कार्यों को सम्पादित करते हैं जिसमें केवल उनका लाभ हो। ऐसे व्यक्ति मानवता की स्थापना में एक बाधक के रूप में होते हैं जो समाज-कल्याण के मार्ग को अवरुद्ध करने का कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्ति 'परहित' के बजाय 'स्वहित' पर ही आत्मकेन्द्रित रहते हैं।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।

लोभियों का दमन योगियों के दमन से किसी प्रकार कम नहीं होता है। लोभ के बल से वे, काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं, मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। अब और चाहिए क्या? जिससे वे कुछ पाने की आशा रखते हैं वह यदि उन्हें दस गालियाँ भी देता है तो उनकी आकृति पर न रोष का कोई चिह्न प्रकट होता है और न मन में ग्लानि होती है। न उन्हें मक्खी चूसने में घृणा होती है और न रक्त चूसने में दया। सुन्दर से सुन्दर रूप देखकर वे अपनी एक कौड़ी भी नहीं भूलते। करुण से करुण स्वर सुनकर वे अपना एक पैसा भी किसी के यहाँ नहीं छोड़ते। तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के सामने हाथ फैलाने से वे लज्जित नहीं होते। क्रोध, दया, घृणा, लज्जा आदि करने से क्या मिलता है कि वे करने जायें? जिस बात से उन्हें कुछ मिलता नहीं जबकि उसके लिए उनके मन के किसी कोने में जगह नहीं होती, तब जिस बात से पास का कुछ जाता है, वह बात उन्हें कैसी लगती होगी, यह यों ही समझा जा सकता है। जिस बात में कुछ लगे वह उनके किसी काम की नहीं चाहे वह कष्ट निवारण हो या सुख-प्राप्ति, धर्म हो या न्याय। वे शरीर सुखाते हैं, अच्छे भोजन, अच्छे वस्त्र आदि की आकांक्षा नहीं करते। लोभ के अंकुश से अपनी सम्पूर्ण इंद्रियों को वश में रखते हैं। लोभियों! तुम्हारा अक्रोध, तुम्हारा इन्द्रिय-निग्रह, तुम्हारा मानापमान-समता, तुम्हारा तप अनुकरणीय है। तुम्हारी निष्ठुरता, तुम्हारी निर्लज्जता, तुम्हारा अविवेक, तुम्हारा अन्याय विगर्हणीय है। तुम धन्य हो! तुम्हें धिक्कार है!।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।
(ख) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर लोभियों के लक्षण बताइए।
(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए।

उत्तर- (क) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक –
'लोभियों का व्यक्तित्व'

उत्तर- (ख)

उपर्युक्त गद्यांश में लेखक ने लोभियों के जिन लक्षणों को रेखांकित किया है, उनमें निष्ठुरता, निर्दयता, निर्लज्जता, कृपणता, अविवेकीपन जैसे- लक्षण प्रमुख हैं। लोभी व्यक्ति लोभ के बल पर काम और क्रोध को जीतते हैं, सुख की वासना का त्याग करते हैं तथा मान-अपमान में समान भाव रखते हैं। लोभ के बल पर वे अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों को अपने वश में रखते हैं।

उत्तर– (ग)
संक्षेपण–

'लोभियों के गुण'

लोभियों और योगियों का संयम लगभग समान प्रवृत्ति का होता है। लोभी व्यक्ति लोभ के बल पर काम, क्रोध और सुख की इच्छा पर विजय प्राप्त करते हुए मान-अपमान से अपने आप को मुक्त रखते हैं। कुछ प्राप्त करने की इच्छा उन्हें निर्लज्ज और निर्दय बना देती है। क्रोध, दया, करुणा, घृणा इत्यादि के लिए उनके जीवन में कोई स्थान नहीं होता है। जिस कार्य से उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता है, वह कार्य उनके लिए निरर्थक है, चाहे वह किसी भी कोटि का क्यों न हो। अच्छी जीवनशैली की आकांक्षा न रखते हुए वे अपने शरीर पर ध्यान नहीं देते तथा अपनी सम्पूर्ण इन्द्रियों का निग्रह कर लेते हैं। लोभियों में व्याप्त सकारात्मक गुण अनुकरणीय तथा नकारात्मक गुण निंदनीय प्रवृत्ति के होते हैं इसलिए धन्य होने के बावजूद भी उन्हें धिक्कार है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) अर्द्ध-सरकारी पत्र किसे कहते हैं? यह सरकारी पत्र से किस प्रकार भिन्न होता है? दोनों का अलग-अलग प्रारूप तैयार कीजिए।

(ख) नगर महापौर की ओर से महानगर में डेंगू से हो रही मृत्यु संबंधी एक सरकारी पत्र उत्तर प्रदेश शासन को लिखिए।

उत्तर–(क)

अर्द्ध सरकारी पत्र– पत्र आलेखन का वह औपचारिक प्रारूप जिसके माध्यम से प्रायः समान स्तर के अधिकारियों के मध्य शासकीय प्रयोजनार्थ विचार-विमर्श, वार्ता-बैठक, कतिपय गोपनीय मामलों इत्यादि संदर्भित पत्र व्यवहार किया जाता है, अर्द्ध सरकारी पत्र कहलाता है।

अर्द्ध सरकारी पत्र की सरकारी पत्र से भिन्नता–

- अर्द्ध-सरकारी पत्र का उद्गम पदाधिकारी के स्तर से होता है, जबकि सरकारी पत्र का उद्गम पद के स्तर से होता है।
- अर्द्ध-सरकारी पत्र का गन्तव्य शासन के भीतर तथा शासन के बाहर भी होता है, जबकि सरकारी पत्र का गन्तव्य शासन के भीतर ही होता है।
- अर्द्ध-सरकारी पत्र की विषय-वस्तु शासकीय प्रयोजनार्थ वार्ता/विमर्श/सुझाव/सलाह इत्यादि से जुड़ी होती है, जबकि सरकारी पत्र की विषय-वस्तु किसी शासकीय कार्य व्यवहार से सम्बन्धित आदेश/निर्देश/नीति/निर्णय इत्यादि से जुड़ी होती है।
- अर्द्ध-सरकारी पत्र की भाषा शैली उत्तम-पुरुष की आत्मीय व मैत्री भाव तथा आदर सूचक वाली होती है जबकि सरकारी पत्र की भाषा तटस्थ, अन्य पुरुष तथा आदेशात्मक पुट वाली होती है।
- अर्द्ध-सरकारी पत्र का सम्बोधन आत्मीयता के साथ 'प्रिय श्री महोदय' से होता है जबकि सरकारी पत्र का सम्बोधन औपचारिक शब्दावली 'महोदय' से होता है।

अर्द्ध सरकारी पत्र का प्रारूप

अर्द्ध स.प.सं.–.....
विभाग–.....

मुहर

नाम.....,
पद नाम .....।
अनुभाग–.....
दि.–.....,स्थान–.....

विषय– ..... के सन्दर्भ में।

प्रिय श्री महोदय,

उक्त विषय में आपसे अपेक्षा है कि .....
.....।

2.....
.....।

सादर,

भवनिष्ठ

संलग्नक–उपर्युक्तानुसार। ह0.....
(नाम .....)

सेवा में,
श्री .....,
पद .....,
शा.पता .....,
.....।

सरकारी पत्र का प्रारूप

पत्रांक .....

प्रेषक,
नाम .....,
पद .....,
शा0 पता .....,
.....।
सेवा में,
पद .....,
शा0 पता .....,।

अनुभाग ..... दिनांक ....., स्थान .....

विषय–.....के सन्दर्भ।

महोदय,

उक्त विषय में आपको निदेशित है कि .....
.....।

2. .....
.....।

3. उक्त का अनुपालन तत्काल प्रभाव से सुनिश्चित करें।

भवदीय

संलग्नक– यथोक्त। ह0 .....
(नाम .....)
पद .....।

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :–
1. .....।
2. .....।

आज्ञा से
ह0 .....
(नाम .....)
पद .....।

उत्तर– (ख)

पत्रांक–12क/2च/2021-22

प्रेषक,
क.ख.ग.,
नगर आयुक्त,
प्रयागराज।
सेवा में,
मुख्य सचिव,
उ0प्र0 शासन,
लखनऊ।

दि0-12 अप्रैल, 2022, प्रयागराज

अनुभाग–1

विषय– महानगर में बढ़ते डेंगू के प्रकोप और उससे होने वाली मौतों के सन्दर्भ में।

महोदय,

उक्त विषय में आपको निदेशित करने का आदेश हुआ है कि नगर में डेंगू का आतंक थमने का नाम ही नहीं ले रहा है, जिससे डेंगू से होने वाली मौतों का आँकड़ा दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जिले के डॉक्टरों तथा नगरपालिका के समवेत प्रयास भी इसे रोकने में कारगर साबित नहीं हो रहे हैं।

2. डेंगू के बढ़ते प्रकोप और उससे होने वाली मौतों को रोकने के लिए अनुभवी डॉक्टरों की एक टीम जिले स्तर पर बनायी जाए तथा इस सम्बन्ध में नागरिकों को जागरूक भी किया जा जाए ताकि इस भयावह बीमारी की रोकथाम सुनिश्चित हो सके।

भवदीय

संलग्नक– मौतों से सम्बन्धित आँकड़ों की छाया प्रति।

ह0 .....
(क.ख.ग.)
नगर आयुक्त।

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ प्रेषित–
1. सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, उ0प्र0।
2. मु0 चिकित्सा अधिकारी, प्रयागराज, उ0प्र0।

आज्ञा से
ह0.....
(क.ख.ग.)
नगर आयुक्त।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।
अनुक्रिया, अधिष्ठित, वादी, आगमन, सज्जन, सुपुत्र, राग, सम्मुख, सलज्ज, उदात्त

उत्तर–

शब्द	**विलोम**
अनुक्रिया	प्रतिक्रिया
अधिष्ठित	अनधिष्ठित
वादी	प्रतिवादी
आगमन	प्रस्थान
सज्जन	दुर्जन
सुपुत्र	कुपुत्र
राग	द्वेष, विराग
सम्मुख	विमुख
सलज्ज	निर्लज्ज
उदात्त	अनुदात्त

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश कीजिए।
उपासना, दुस्साध्य, निमीलित, सुपुत्र, अपस्मार

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग कीजिए।
अपनापा, वैदिक, राधेय, गुरुता, ग्रामीण

उत्तर-(क)

शब्द	**उपसर्ग**
उपासना	उप
दुस्साध्य	दुस्
निमीलित	नि
सुपुत्र	सु
अपस्मार	अप

उत्तर–(ख)

शब्द	**प्रत्यय**
अपनापा	आपा
वैदिक	इक
राधेय	एय
गुरुता	ता
ग्रामीण	ईन

6. निम्नलिखित वाक्यांशों या पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।
(1) उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति
(2) शत्रुओं का हनन करने वाला
(3) मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति
(4) युद्ध की प्रबल इच्छा हो जिसमें
(5) उत्तर देकर खण्डन करना

उत्तर–वाक्यांशों या पदबन्धों के लिए एक-एक शब्द–
(1) उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति – **रिक्थ**
(2) शत्रुओं का हनन करने वाला – **शत्रुहंता**
(3) मुकदमा दायर करने वाला व्यक्ति – **वादी**
(4) युद्ध की प्रबल इच्छा हो जिसमें – **युयुत्सु**
(5) उत्तर देकर खण्डन करना – **प्रत्युक्त**

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।
(1) तुम तुम्हारी किताब ले जाओ।
(2) यही सरकारी महिलाओं का अस्पताल है।
(3) यह एक गहरी समस्या है।
(4) मोहन आगामी वर्ष कलकत्ता गया था।
(5) गणित एक कठोर विषय है।

(ख) निम्न शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए।
व्यवहारिक, तत्कालीक, आशीर्वाद, पुज्यनीय, इच्छिक

उत्तर–(क) वाक्यों का शुद्ध रूप–
(1) तुम अपनी किताब ले जाओ।
(2) यही महिलाओं का सरकारी अस्पताल है।
(3) यह एक गम्भीर समस्या है।
(4) मोहन विगत वर्ष कलकत्ता गया था।
(5) गणित एक कठिन विषय है।

उत्तर–(ख)

अशुद्ध	**शुद्ध**
व्यवहारिक	व्यावहारिक
तत्कालीक	तात्कालिक
आशीर्वाद	आशीर्वाद
पुज्यनीय	पूजनीय
इच्छिक	ऐच्छिक

नोट : आयोग द्वारा पूछे गये प्रश्न में आशीर्वाद शब्द की वर्तनी शुद्ध है।

8. निम्नलिखित मुहावरों/लाकोक्तियों के अर्थ लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(1) जब तक साँस तब तक आस
(2) जिसका काम उसी को साजे
(3) चित भी मेरी पट भी मेरी
(4) झूठ के पाँव नहीं होते
(5) हाथ कंगन को आरसी क्या
(6) आड़े आना
(7) आँखे बिछाना
(8) खाक छानना
(9) ठन-ठन गोपाल
(10) शैतान की आँत

उत्तर–

(1) जब तक साँस तब तक आस।

अर्थ– आखिरी क्षण तक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना।

वाक्य प्रयोग– प्रयत्नशील मनुष्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। जब तक साँस, तब तक आस की कहावत को चरितार्थ करता वह तब तक नहीं रुकता, जब तक उसे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता है।

(2) जिसका काम उसी को साजै

अर्थ– योग्यता के अनुसार कार्य करना चाहिए।

वाक्य प्रयोग– नृत्य कला में प्रवीण न होने के बावजूद मोहन नृत्य की प्रतियोगिताओं में भाग लेता रहता है। जिसका काम उसी को साजै कहावत से अनभिज्ञ मोहन सदैव उपहास का पात्र बनता रहता है।

(3) चित भी मेरी, पट भी मेरी।

अर्थ– चतुर्दिक स्वयं के लाभ का दावा करना।

वाक्य प्रयोग– ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय शासकों से अंग्रेजों द्वारा की जाने वाली संधियाँ केवल नाम मात्र की थीं। वे सिर्फ चित भी मेरी, पट भी मेरी अवधारणा को ध्यान में रखकर ये संधियाँ करते थे।

(4) झूठ के पाँव नहीं होते।

अर्थ– झूठ अधिक समय तक स्थायी नहीं रहता।

वाक्य प्रयोग– महात्मा गांधी ने अपना जीवन सत्य की व्यापक खोज में लगा दिया। उन्होंने सदैव सत्य का अनुशीलन किया क्योंकि उनका मानना था कि झूठ के पाँव नहीं होते। सत्य उनके लिए सर्वोपरि मूल्य था।

(5) हाथ कंगन को आरसी क्या।

अर्थ– प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

वाक्य प्रयोग– देश में चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोल-बाला है, जिसे किसी भी कार्यालय में जाकर देखा जा सकता है। जैसा कि कहा भी गया है 'हाथ कंगन को आरसी क्या।'

(6) आड़े आना।

अर्थ– बाधक होना/बनना।

वाक्य प्रयोग– मनुष्य का अहंकार उसके विकास में आड़े आता है। यदि मनुष्य अपने अहंकार को छोड़कर अपना काम ईमानदारी से करे तो उसका चतुर्दिक विकास सम्भव होगा।

(7) आँखे बिछाना।

अर्थ– आदरपूर्वक स्वागत करना।

वाक्य प्रयोग– नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीतकर भारतीय जनता का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया। भारत वापसी पर जनता उनके लिए आँखे बिछाये खड़ी थी।

(8) खाक छानना।

अर्थ– व्यर्थ इधर-उधर भटकना।

वाक्य प्रयोग–आज कल के युवा अपने भविष्य की परवाह किए बिना खाक छानते रहते हैं जिसके कारण भविष्य में उनके विकास की राहें अवरुद्ध हो जाती हैं।

(9) ठन-ठन गोपाल।

अर्थ– बहुत गरीब।

वाक्य प्रयोग– भारतीय किसानों का स्वाभाव कर्मयोगी की तरह होता है। ठन-ठन गोपाल होने के बावजूद वे अपने कर्मयोग में लगे रहते हैं।

(10) शैतान की आँत।

अर्थ– बहुत लम्बी/न खत्म होने वाली।

वाक्य प्रयोग–लोभी प्रवृत्ति के मनुष्य की इच्छाएँ शैतान की आँत की तरह होती है। इनकी इच्छाओं का दमन किसी भी माध्यम से सम्भव नहीं है।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा, 2021
निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट/Note :

(i) प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड से केवल एक–एक विषय का चयन कर कुल तीन निबंध हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा उर्दू भाषा में लिखिए।/The Question paper is divided into three Sections. Write three essays in Hindi or English or Urdu language, selecting one topic from each section.

(ii) प्रत्येक निबंध में कुल प्रयुक्त शब्दों की अधिकतम सीमा 700 शब्दों की है।/Words limit each essay is 700 words.

(iii) प्रत्येक निबंध के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।
Each essay carries 50 marks.

खण्ड-अ/Section-A

1. Art and social liberty./कला और सामाजिक मुक्ति।
2. Secular Politics: Needs and Challenges.
धर्म-निरपेक्ष राजनीतिः आवश्यकता और चुनौतियाँ।
3. Status of Higher Education and Research in India: Ways of Future.
भारत में उच्च शिक्षा और शोध की स्थिति : भविष्य की राहें।

खण्ड-ब/Section-B

4. New Agricultural Laws and Peasant Movement.
नये कृषि कानून और किसान अन्दोलन
5. Citizenship Amendment Act and Inclusive India.
नागरिकता संशोधन कानून और समावेशी भारत।
6. Effect of change in Globla Environment: Challenges and ways to go out.
वैश्विक पर्यावरण में बदलाव का प्रभाव : चुनौतियाँ और रास्ते।

खण्ड-स/Section-C

7. Globla economy under COVID-19.
कोविड-19 के प्रभाव में वैश्विक अर्थव्यवस्था।
8. Democracy, election and Caste.
लोकतंत्र, चुनाव और जाति।
9. India's Foreign Policy at present: condition and direction./वर्तमान में भारत की विदेश नीतिः दशा और दिशा।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पी.सी.एस मुख्य परीक्षा, 2020

सामान्य हिन्दी

निर्धारित समय : तीन घंटे | **अधिकतम अंक : 150**
Time Allowed : Three Hours | **Maximum Marks : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंत में निर्धारित अंक अंकित हैं।
(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य किसी का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग उल्लेख कर सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत, प्रकृति की संसार में सबसे बड़ी लीला भूमि है। यहाँ सभी ऋतुएँ-किसी न किसी भाग में एक साथ मौजूद रहती हैं। नदी, पर्वत, वन और अन्नपूर्णा धरती से, भारतीय साहित्य का सदा से गहरा संबंध रहा है क्योंकि उसने प्रकृति से अपनी सहधर्मिता और सहअस्तित्व को पहचाना है। भारत की पहली कविता ही पशु-पक्षी की हिंसा के विरुद्ध जन्मी थी। कवियों ने प्रकृति की हल्की से हल्की धड़कन और कंपन को महसूस किया है। आदिकवि वाल्मीकि जानते हैं कि कड़कड़ाती ठंड में जलचर हंस कैसे संभल कर, डरकर ठंडे पानी में पैर डालते हैं? कालिदास को पता है कि अनुकूल मंद-मंद पवन यात्रा का शुभ शकुन है। प्रेमचंद के बैल अपनी व्यथा-कथा हमारे कान में कह जाते हैं। प्रसाद की प्रकृति हमें अतिवाद के प्रति सावधान करती है। रचनाकार तो मनुष्य की संवेदना का प्रतीक भी है और प्रहरी भी। प्रकृति से उसका साहचर्य और संवाद मनुष्य से प्रकृति के संवाद और साहचर्य का प्रतीक है। इस तरह अंतःप्रकृति और वाह्यप्रकृति के सहारे निरंतर परिष्कृत, सरल और प्रांजल बनती है। आज प्रकृति के प्रति हिंसा और विध्वंसवादी होकर हमने क्या पाया है- तरह तरह के शारीरिक, मानसिक रोग, एक संकीर्ण और विकृत अंतःकरण, एक संवेदनहीन आत्मकेंद्रित जगत और चारों तरफ प्रदूषण का तांडव-जो अंततः हमारा विनाश ही करेगा। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि पहाड़ और समुद्र को देखने भर से मनुष्य का हृदय विशाल होता है- तो यदि वे हमारे मन में ही बस जाएँ, तो हम कितने विराट और उदात्त हो सकेंगे? यह जान लेना जरूरी है कि प्रकृति मनुष्य का प्रतिपक्ष नहीं है, वह उसकी सहचरी है। जो रहस्य खोजे गये हैं- वे खोजने के लिए ही उसने बचाए हैं, ताकि मनुष्य का कृतित्व अकारथ न हो, उसका पौरुष हीनता- बोध में ना बदल जाए।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) मनुष्य और प्रकृति के आपसी रिश्ते को गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-(क)

भावार्थ-

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक प्रकृति व मनुष्य के मध्य सम्बन्धों में 'समय-समय पर होने वाले बदलाव व उसके प्रभाव का वर्णन करता है। लेखक कहता है कि जिस प्रकार प्रकृति ने भारत को प्राकृतिक विविधता से सम्पन्न किया उसी प्रकार भारतीय कवियों ने भी उसे अपने साहित्य में वरीयता प्रदान की। पूर्व में कवियों ने प्रकृति के प्रति संवदेनशीलता, प्रेम व लगाव का सजीव चित्रण अपनी कृतियों में किया परन्तु वर्तमान में जब मनुष्य प्रकृति के प्रति असंवेदनशील हो गया है तो वह विभिन्न व्यथाओं से पीड़ित है। लेखक मनुष्य को सचेत करता है कि प्रकृति मनुष्य की सहयोगी है, उसकी विशालता को मन में स्थान दे।

उत्तर-(ख)

पूर्व में मनुष्य व प्रकृति के मध्य गहरे सम्बन्ध रहे हैं क्योंकि मनुष्य प्रकृति की सहधर्मिता व सहअस्तित्व से परिचित था, प्रकृति से मनुष्य का साहचर्य व संवाद बना रहा, जिससे मनुष्य का अन्तःकरण, बाह्य प्रकृति के सहारे परिष्कृत, सरल व प्रांजल बनता रहा। परन्तु आज जब प्रकृति के प्रति मनुष्य उपेक्षित भाव वाला हो गया है, तब वह विभिन्न व्यथाओं से ग्रसित है। प्रकृति व मनुष्य के मध्य सम्बन्ध ऐसे हैं कि पहाड़ व समुद्र देखने मात्र से ही मनुष्य का हृदय विशाल बन जाता है। अतः मनुष्य का प्रकृति के साथ साहचर्य अत्यन्त आवश्यक है।

उत्तर-(ग)

1. भारत..... .... भूमि है।

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्ति में लेखक कहता है कि भारत में एक साथ सभी ऋतुएं किसी न किसी भाग में मौजूद रहती हैं जिससे भारत प्राकृतिक रूप से विविधता पूर्ण है। उदाहरण के लिए ग्रीष्म ऋतु में जहाँ मैदानी भाग तेज शुष्क हवाओं व तेज धूप का सामना करते हैं,

तो वहीं दूसरी ओर पहाड़ी भागों में ठंडे मौसम का प्रभाव रहता है। इन्हीं विविधताओं से परिपूर्ण होने के कारण ही भारत में लगभग सभी ऋतुएँ पायी जाती हैं।

2. रचनाकार.....प्रहरी भी।

व्याख्या–इस पंक्ति में लेखक कहता है कि एक रचनाकार अपनी कृतियों से प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, लगाव व प्रेम का सजीव चित्रण करता है। यथार्थ में वह मनुष्य की संवेदनशीलता भी है। रचनाकार विभिन्न व्यथा-कथाओं के माध्यम से मनुष्य को संवेदनशील भी बनाता है। मनुष्य की संवेदनाओं को संरक्षित रखने का कार्य एक रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है इसलिए वह प्रहरी भी है।

3. प्रकृति ....प्रतीक है।

व्याख्या–रचनाकार स्वयं एक मनुष्य होने के कारण प्रकृति से अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। वह प्राकृतिक परिवेश से जिस प्रकार का व्यवहार स्थापित करता है, ठीक वैसा ही व्यवहार प्रकृति मनुष्य के साथ स्थापित करती है। प्रकृति के साथ किया जाने वाला व्यवहार ही प्रकृति द्वारा उसके प्रति किया जाने वाला व्यवहार बनता है।

4. पहाड़ और समुद्र ....उदात्त हो सकेंगे?

व्याख्या–प्रस्तुत व्याख्येय पंक्ति में लेखक कहता है कि पहाड़ तथा समुद्र, जो विभिन्न प्रकार की विशालता को धारण करते हैं, को देखने मात्र से मानव मन विशालता को प्राप्त करता है, उसकी ऊंचाइयों एवं गम्भीरता के कारण विराटता का अनुभव करता है, यदि यही विशेषताएँ हमारे मन-मस्तिष्क में समा जाएँ, पहाड़ तथा समुद्र जैसी गम्भीरता को स्वयं धारण कर सकें तो मानव मन उदात्तता एवं विराटता को स्वतः ही धारण कर लेगा।

5. प्रकृति ....सहचरी है।

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्ति में लेखक प्रकृति को मनुष्य का विरोधी न मानकर उसे उसका सहयोगी मानता है। मनुष्य प्रकृति के साथ आदिम अवस्था से रहता चला आ रहा है। मनुष्य ने प्रकृति का अतिरेक दोहन किया, किंतु प्रकृति ने कभी भी मानव का शोषणा न करके उसका पोषण ही किया। प्रकृति आधुनिक विकास की प्रक्रिया में भी मानव की सहयोगी बनकर उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। अतः प्रकृति मानव विरोधी न होकर उसके सहयोगी की भूमिका में अपने आप को प्रस्तुत करती है।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।

विद्वानों का मानना है कि राजनीति ने भाषा को भ्रष्ट कर दिया है; शब्दों से उनके सही अर्थ छीनकर उन्हें छद्म अर्थ पहना दिए हैं। संसद, संविधान, कानून, जनहित, न्याय, अधिकार, साक्ष्य, जाँच जैसे ढेरों शब्द अपना असली अर्थ खोकर बदशक्ल हो चुके हैं। शब्द भले ही अच्छा या बुरा कोई भी अर्थ प्रकट करता हो, जब अपना असली अर्थ खो देता है, तो वह बदशक्ल हो जाता है। भाषा का भ्रंश, अंततः सामाजिक मानवीय मूल्यों का भ्रंश है। कल्पना कीजिए कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से जो कहे उसका वही अर्थ ना हो, जो भाषा प्रकट करती है या ऐसे अनुभवों की पुनरावृत्ति के कारण दूसरा व्यक्ति उसे सही अर्थ में ना लेकर उसमें अनर्थ या अन्य अर्थ खोजने लगे तो क्या होगा? यह मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उठने का मामला है, जो सामाजिक विशृंखलता का पहला और अंतिम चरण है। पहला इसलिए कि भाषा को मनुष्य ने परस्पर संवाद और सही संप्रेषण के लिए गढ़ा है और अंतिम इसलिए कि आगे चलकर मनुष्य का कर्म भी भाषा के मूल अर्थ का नहीं उसके भ्रंश का रूप ले लेता है। यह इस तरह होता है कि छद्म अर्थ का वाहन करते-करते भाषा अंततः हमारे कर्म को ही छद्म में बदल देती है। क्या हम भाषा को भ्रष्ट करने की परिणति राजनीतिक और सामाजिक जीवन के चरम पतन में नहीं देख रहे?

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(ख) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर भाषा की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए।

उत्तर-(क)

शीर्षक – 'भाषा का भ्रंश।'

उत्तर-(ख)

भाषा मनुष्यों या जीव-जगत में परस्पर संवाद का सशक्त माध्यम है, यही इसका मूल मंतव्य है। सही सम्प्रेषण भाषा से ही सम्भव है, भाषा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का आइना है। अन्ततः वही उसका व्यक्तित्व और भविष्य निर्धारित करती है, इस कारण भाषा का पतन एक गम्भीर संकट है। यह संकट राजनीति से जन्मा हुआ है, राजनीति इसे भ्रष्ट करने पर तुली हुई है, यह गम्भीर संकट वहीं से पैदा हुआ है, भाषा का हमारे कर्म पर विशेष प्रभाव पड़ता है। भ्रष्ट भाषा के कारण हमारे कर्म भी भ्रष्ट हो जाते हैं। भ्रष्ट भाषा पूरी सभ्यता को नष्ट करने की क्षमता रखती है। भाषा का अस्तित्व और उसकी गरिमा की रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है।

उत्तर-(ग) संक्षेपण–

'भाषा का महत्त्व'

भाषा को भ्रष्ट करने में राजनीति की अहम भूमिका है। यह क्षेत्रीय शब्दों के दोहरे अर्थ पैदा करके उनकी गरिमा को नष्ट करता है। सामाजिक व मानवीय मूल्यों का आधारतत्व भाषा यदि नष्ट होती है तो वह परस्पर विश्वास को भी खण्डित करती है। भाषा मानव सम्प्रेषण का अनिवार्य एवं सशक्त माध्यम है। भाषा का छद्म रूप मानव जाति को चरम पतन की ओर ले जाएगा।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

(क) कार्यालय आदेश किसे कहते हैं? शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की ओर से जारी विशेष छात्रवृत्ति योजना संबंधी कार्यालय आदेश का प्रारूप तैयार कीजिए।

(ख) मुखिया की ओर से पंचायत में कोविड-19 से हो रही मृत्यु-संबंधी एक सरकारी पत्र जिलाधिकारी को लिखिए।

उत्तर-(क)

कार्यालय आदेश शासकीय पत्र-व्यवहार का वह रूप होता है जिसके माध्यम से किसी कार्यालय अथवा सरकारी संस्थान अथवा व्यापारिक संस्थान में एक वरिष्ठ अधिकारी अपने अधीनस्थ प्राधिकारियों/कर्मचारियों को विभिन्न सेवा सम्बन्धी मामलों जैसे- अवकाश स्वीकृत, अनुशासनात्मक मामलों या किसी प्रकार की अपील अथवा प्रत्यावेदन पर लिये गये किसी निर्णय को प्रशासकीय दृष्टिकोण से अनिवार्य अनुपालनार्थ जारी करते हैं।

शिक्षा विभाग, उ0प्र0

अनुभाग–1

संख्या - क 148 अ/द/पोस्ट मैट्रिक/2020-21

दि0- 21-जनवरी, 2021, लखनऊ

कार्यालय आदेश

वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए पोस्ट मैट्रिक विशेष छात्रवृत्ति योजनाओं हेतु विद्यार्थियों, विद्यालयों, जिला शिक्षा अधिकारियों तथा समस्त प्रक्रिया ऑनलाइन पोर्टल के जरिए पेपर लेस की गई है। इस संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी एवं संबंधित कार्मिकों को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रशिक्षण कार्यशाला दिनांक 02-12-2020 को आयोजित की जा चुकी है।

2. समस्त संबंधित पक्ष उक्त समय-सीमा एवं दिशा-निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए समस्त कार्य करना सुनिश्चित करें।

संलग्नकः-

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिकता विभाग

उत्तर प्रदेश का आदेश दिनांक - 26-12-2020

आज्ञा से

ह.....

(अ.ब.स.)

सचिव

उत्तर-(ख)

सरकारी पत्र

प्रेषक,

य र ल,

सचिव,

ग्राम पंचायत रानीपुर,

बाराबंकी।

पत्रांक – 10/2च/2020-21

सेवा में,

जिलाधिकारी,

बाराबंकी।

अनुभाग-1

बाराबंकी, दि0- 20 मई, 2020

विषय : पंचायत में कोविड-19 से ही रही मृत्यु के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि पिछले कुछ दिनों में ग्राम सभा में कोविड-19 के संक्रमण का प्रसार तीव्र गति से हुआ है। इससे ग्राम सभा में मृत्यु की घटनाओं में वृद्धि हो रही है। ग्राम सभा में कोविड-19 के प्रसार का कारण केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों (मास्क, सैनिटाइजर का प्रयोग तथा उचित दूर) का समुचित तरीके से पालन न किया जाना है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में भी कोविड-19 के उचित उपचार हेतु सुविधाओं का अभाव है।

2. अतः आपसे अनुरोध है कि केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित कराने के साथ-साथ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में उचित सुविधाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करें।

भवदीय

संलग्नक– कोविड-19 से होने वाली मृत्यु के आँकड़ों की छाया प्रति।

ह0.....

(य. र. ल.)

ग्राम सचिव।

ग्राम पंचायत

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।

सुषुप्ति, पूर्व, प्रसन्न, परकीय, महान्, ज्ञानी, लघु, नीति, शोक, विघ्न

उत्तर-

शब्द		**विलोम**
सुषुप्ति	-	जागृति
पूर्व	-	पश्चात, पश्चिम
प्रसन्न	-	अप्रसन्न
परकीय	-	स्वकीय
महान्	-	तुच्छ
ज्ञानी	-	अज्ञानी, मूढ़
लघु	-	दीर्घ, गुरू
नीति	-	अनीति
शोक	-	हर्ष
विघ्न	-	निविघ्न

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों को निर्देश कीजिए।

अपव्यय, निष्काम, उन्नयन, संशय, स्वच्छ

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग कीजिए।

क्रीड़ा, मिठाई, मरियल, भिक्षुक, धमकी

उत्तर-(क)

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अप	बुरा/विपरीत	अपव्यय, अपयश, अपशब्द अपशकुन
निस	बिना/बाहर	निष्काम, निष्कर्म, निश्चय, निष्फल
उत्	उपर/श्रेष्ठ	उन्नयन, उद्देश्य, उन्नति, उल्लिखित
सम्	अच्छी तरह/ पूर्ण शुद्ध	संशय, सन्तोष, संगठन, संचार संरक्षा
सु	अच्छा/सरल	स्वच्छ, सुगन्ध, सुलभ, सुबोध, सुशील, स्वागत

या

अपव्यय में उपसर्ग है – अप्
निष्काम में उपसर्ग है – निस्
उन्नयन में उपसर्ग है – उत्
संशय में उपसर्ग है – सम्
स्वच्छ में उपसर्ग है – सु

उत्तर-(ख)

शब्द		प्रत्यय
क्रीड़ा	-	आ
मिठाई	-	आई
मरियल	-	इयल
भिक्षुक	-	उक
धमकी	-	ई

6. निम्नलिखित वाक्यांशों या पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(a) जिसका आदि न हो
(b) व्यर्थ खर्च करने वाला
(c) बिना पलक झपकाए
(d) मरने की इच्छा
(e) जिसे दूर करना कठिन हो।

उत्तर-

वाक्यांश		एक शब्द
जिसका आदि न हो	-	अनादि
व्यर्थ खर्च करने वाला	-	अपव्ययी
बिना पलक झपकाए	-	निर्निमेष
मरने की इच्छा	-	मुमूर्षा
जिसे दूर करना कठिन हो	-	दुर्निवार

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

(a) निरपराधी को दंड नहीं मिलनी चाहिए।
(b) आप खाए कि नहीं?
(c) लड़की ने दही गिरा दी।
(d) आपके दवा से वह आरोग्य हुआ।
(e) कमरा लोगों से लबालब भरा है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए

सिंहिनी, छुद्र, चर्मोत्कर्ष, चिन्ह, बरबर्ता

उत्तर-(क)

अशुद्ध वाक्य		शुद्ध वाक्य
1. निरपराधी को दण्ड नहीं मिलना चाहिए	-	निरपराध को दण्ड नहीं मिलना चाहिए
2. आप खाए कि नहीं?	-	आप ने खाया या नहीं?
3. लड़की ने दही गिरा दी	-	लड़की ने दही गिरा दिया।
4. आपके दवा से वह आरोग्य हुआ	-	आप की दवा से वह स्वस्थ/ नीरोग हुआ।
5. कमरा लोगों से लबालब भरा है	-	कमरा लोगों से खचाखच भरा है।

उत्तर-(ख)

अशुद्ध शब्द		शुद्ध शब्द
1. सिंहिनी	-	सिंहनी
2. छुद्र	-	क्षुद्र
3. चर्मोत्कर्ष	-	चरमोत्कर्ष
4. चिन्ह	-	चिह्न
5. बरबर्ता	-	बर्बरता

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(1) आठ-आठ आँसू बहाना
(2) कागज की नाव
(3) चादर से बाहर पैर फैलाना
(4) टोपी उछालना
(5) मिट्टी खराब करना
(6) रँगा सियार होना
(7) का बरखा जब कृषि सुखाने
(8) कंगाली में आटा गीला
(9) नेकी कर कुएँ में डाल
(10) पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

उत्तर-

(1) आठ-आठ आँसू बहाना (फूट-फूट कर रोना)

वाक्य प्रयोग- जिस समय पढ़ना था, तो तुम आवारागर्दी करते रहे अब फेल हो जाने पर आठ-आठ आँसू रोने से क्या फायदा।

(2) कागज की नाव (न टिकने वाली वस्तु)

वाक्य प्रयोग - हमें अपने शरीर पर गर्व नहीं करना चाहिए ये तो कागज की नाव है।

(3) चादर से बाहर पैर फैलाना (आय से अधिक खर्च करना)

वाक्य प्रयोग - डेढ़ सौ रूपए कमाते हो और इतनी खर्चीली लतें पाल रखी हैं, चादर से बाहर पैर फैलाने में कौन सी अक्लमन्दी है।

(4) टोपी उछालना (इज्जत मिट्टी में मिलाना)

वाक्य प्रयोग - रमेश ने घर से भाग कर शादी करके अपने माँ-बाप की टोपी उछाल दी।

(5) मिट्टी खराब करना (दुर्दशा करना)

वाक्य प्रयोग - रोहन की चोरी की आदत के लिए उसके माता पिता ने उसे बहुत समझाया पर वह नहीं माना और उसने अपनी मिट्टी खराब कर दी।

(6) रंगा सियार होना (धूर्त होना)

वाक्य प्रयोग - आज-कल किसी पर भी भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि अधिकतर लोग रंगा सियार ही होते हैं।

(7) का बरखा जब कृषि सुखाने (समय निकल जाने पर मदद् करना)

वाक्य प्रयोग - घर पर कर्ज होने से लोगों से बहुत मदद् माँगी पर किसी ने मदद् नहीं की और घर बिक जाने पर किसी ने आकर मुझे पैसे दिए, इसी को कहते है- का बरखा जब कृषि सुखाने।

(8) कंगाली में आटा गीला (संकट में एक और संकट आना)

वाक्य प्रयोग - महेश इस समय आर्थिक तंगी में चल रहा है, ऊपर से गृहकर, जलकर एवं बिजली के बिल ने कंगाली में आटा गीला कर दिया।

(9) नेकी कर कुएँ में डाल (भलाई करके भूल जाना)

वाक्य प्रयोग - हरीश ने साधू को भरपेट भोजन कराया, लेकिन किसी को बताया नहीं, उसका सिद्धांत है नेकी कर कुएँ में डाल।

(10) पर उपदेश कुशल बहुतेरे (दूसरों को उपदेश देने को आसान समझना)

वाक्य प्रयोग - दुनिया के लोग भी आजकल अजीब हो गए हैं सभी सोशल मीडिया पर ज्ञान बाँटने के लिए बैठे हैं, पर स्वयं उस पर अमल नहीं कर रहें यही है- पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा, 2020

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट/Note :

(i) प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड से केवल एक–एक विषय का चयन कर कुल तीन निबंध हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा उर्दू भाषा में लिखिए।/The Question paper is divided into three Sections. Write three essays in Hindi or English or Urdu language, selecting one topic from each section.

(ii) प्रत्येक निबंध में कुल प्रयुक्त शब्दों की अधिकतम सीमा 700 शब्दों की है।/Words limit each essay is 700 words.

(iii) प्रत्येक निबंध के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।
Each essay carries 50 marks.

खण्ड-अ/SECTION-A

1. साहित्य की सामाजिकता
   Sociality of literature
2. 21वीं सदी में जाति-प्रथा : समस्या और चुनौतियां
   Caste system in 21st century : Problem and Challenges.
3. भारत में चुनाव सुधार : आवश्यकता एवं अपरिहार्यता
   Election reforms in India : Necessity and indispensability.

खण्ड-ब/SECTION-B

4. जल प्रदूषण और गंगा स्वच्छता
   Water pollution and Ganga cleanliness
5. भारत की 5 ट्रिलियन डालर अर्थव्यवस्था : संभावनाएं और चुनौतियां/Five trillion dollar Indian Economy : Possibilities and Challenges
6. भारतीय कृषि : सदाबहार क्रांति की ओर
   Indian Agriculture : Towards evergreen revolution

खण्ड-स/SECTION - C

7. भारत चीन सम्बन्ध और दक्षेस राजनीति
   Indo-China Relation and SAARC Politics
8. कोरोना महामारी : आपदा से अवसर
   Corona Pandemic : Disaster to Opportunity
9. ''आयुष्मान भारत'' - स्वस्थ भारत
   "Aayushman Bharat" - Healthy India

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2019
सामान्य हिन्दी एवं निबन्ध
हल प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।

(iii) पत्र, प्रार्थना–पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जिस प्रकार साहित्य, धर्म और विज्ञान का लोक के व्यापक जीवन में प्रवेश आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन के संस्कार और समाज की स्थिति के लिए कला की अनिवार्य आवश्यकता है। यदि कला कुछ सौन्दर्य प्रेमियों के लिए विलास या कुतूहल वृत्ति का साधन मात्र रहेगी, तो लोक की बड़ी हानि होगी। वस्तुतः कला जीवन के सूक्ष्म और सुन्दर पट का वितान है, जिसके आश्रय में समग्र लोक अपनी उत्सवानुगामी और संस्कारक प्रवृत्तियों को तृप्त करता हुआ, उच्च मन की शान्ति और समन्वय का अनुभव कर सकता है। मनुष्य अपने अन्तिम कल्याण के लिए यह चाहता है कि जितना स्थूल जड़ जगत् उसके चारों ओर घिरा हुआ है, उसको सुन्दर रूप में ढाल ले। स्थूल के ऊपर जो मानस और अध्यात्म जगत है उसको चरित्र और ज्ञान के द्वारा हम आकर्षक और सौन्दर्य युक्त बनाते हैं। इस द्विविध सौन्दर्य के बीच में ही जीवन पूरी तरह से रहने योग्य बनता है। जिस समय जीवन के चरित्र और मनोभाव हमारे चारों ओर विकसित होकर अपनी लहरियों से वातावरण को भर देते हैं और उनकी तरंगें हमारे अंतर्जगत को आह्लादित और प्रेरित करती हैं, उस समय यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि स्थूल पार्थिव वस्तुओं के जो अनगढ़ रूप हमें घेरे हुए हैं, वे भी कला के प्रभाव से द्रवित हो जाएँ और उनमें से रूप-सौन्दर्य और श्री के सोते फूट निकलें। कला का प्रत्येक उदाहरण जगमगाते दीपक की तरह अपने चारों ओर प्रकाश की किरणें भेजता रहता है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) जीवन किस स्थिति में रहने योग्य बनता है?

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : (क) गद्यांश का भावार्थ- कला का उद्देश्य किसी नैतिक या धार्मिक उद्देश्य की प्राप्ति नहीं बल्कि स्वयं अपने पूर्णता की तलाश है। कला सौन्दर्यानुभूति का वाहक है, इसलिए इसे उपयोगिता की कसौटी पर नही परखा जाना चाहिए। समाज, नीति, धर्म, दर्शन आदि के नियमों का पालन कला की स्वच्छंद तथा स्वतः स्फूर्त अभिव्यक्ति में बाधक होते हैं। कला जीवन को समग्रता में देखता है जिसके द्वारा वह मन की उच्च शांति को प्राप्त करता है। वह भौतिकता से ऊपर उठकर आध्यात्मिक जगत को सुन्दर बनाता है। आध्यात्मिकता आन्तरिक प्रसन्नता है, जिसके प्रभाव में भौतिकता के सभी आयाम घुल-मिलकर आध्यात्म में परिणिति हो जाते हैं, जो आन्तरिक आनन्द की अनुभव कराते हैं।

(ख) भौतिकता से ऊपर उठकर जब हम आध्यात्म जगत को सुन्दर बनाते हैं तब जीवन पूरी तरह से रहने योग्य बन जाता है। क्योंकि इसे बाद भौतिक जगत का हमारे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ग) जीवन के संस्कार .....आवश्यक है

जीवन के व्यवहार और समाज को बेहतर बनाने के लिए कला अनिवार्य है क्योंकि जीवन को बेहतर बनाकर ही समाज को बेहतर बनाया जा सकता है।

⇒ वस्तुतः कला ..... अनुभव कर सकता है

कला जीवन की अनुभूतियों का विस्तार है, जिसके आश्रय में समस्त मानव जगत अपनी संस्कार प्रवृत्तियों को भूलकर मन की उच्च शांति और समन्वय का अनुभव करता है।

⇒ स्थूल के ..... मुक्त बनाते हैं।

स्थूल से आशय भौतिक जगत से है जबकि सूक्ष्म अध्यात्म या अलौकित सत्ता को इंगित करता है। भौतिक जगत नश्वर है किन्तु अध्यात्म या सूक्ष्म जगत शाश्वत् और निरन्तर है, इसलिए लेखक का अभिप्राय है कि चूंकि अध्यात्म नश्वर और चिरन्तर है उसका सम्बन्ध हमारे अन्तर्मन से है इसलिए हम अपने परिष्कृत चरित्र एवं ज्ञान द्वारा उसे जितना आकर्षक और सौन्दर्यमय बनाएंगे हमारा जीवन उतना ही सहज और सरल होगा।

⇒ **कला का ..... भेजता रहता है।**

जिस प्रकार दीपक की प्रत्येक किरण अपने चारों ओर प्रकाश फैलाती है, उसी प्रकार कला का प्रत्येक उदाहरण जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। जिसे व्यक्ति को पूर्णता की प्राप्ति हो सके।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिए।

जीवन को उसकी समग्रता में सोचना और जीवन को एक खास इरादे से सोचना दो अलग तरह की तैयारियाँ हैं और इस माने में साहित्य जब भी राजनीति की तरह भाषा का एक तरफा या इकहरा प्रयोग करता है, वह अपनी मूल शक्ति को सीमित या कुंठित करता है। राजनीति के मुहावरे में बोलते समय हम एक ऐसे वर्ग की भाषा बोल रहे होते हैं जिसके लिए भाषा प्रमुख चीज नहीं हैं, वह भाषा का दूसरे या तीसरे दर्जे का इस्तेमाल है। वह एक खास मकसद तक पहुँचने का साधनमात्र है। उसे भाषा की सामर्थ्य, प्रामाणिकता या सच्चाई में उस तरह दिचस्पी नहीं रहती जिस तरह साहित्य को। उसकी भाषा प्रचार-प्रमुख, रेटारिकल और नकली व्यक्तित्व की भाषा हो सकती है क्योंकि राजनीति के लिए भाषा एक व्यावहारिक और कामचलाऊ चीज है जब कि साहित्यकार के लिए भाषा उस जिन्दगी की सच्चाई का जीता-जागता हिस्सा है जिसे वह राजनीतिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक या स्वार्थों की हिंसा, तोड़-फोड़ और प्रदूषण से बचा करके उसकी मूल गरिमा और शक्ति में स्थापित या पुनर्स्थापित करना चाहता है। साहित्य का काम अपनी पहचान को राजनीति का भाषा में खो देना नहीं, बल्कि उस भाषा के छद्म से अपने को लगभग बेगाना करके अकेला कर लेना है, एक सत्त की तरह अकेला, कि राजनीति के लिए जरूरी हो जाए कि वह बार-बार अपनी प्रामाणिकता और सच्चाई के लिए साहित्य से भाषा माँगे न कि साहित्य ही राजनीति की भाषा बनकर अपनी पहचान खो दे।

(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए

(ख) साहित्य की और राजनीति की भाषा में प्रमुख अन्तर क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए।

उत्तर : (क) शीर्षक – **''भाषा का सामर्थ्य''**

(ख) साहित्य की भाषा साहित्यकार के लिए उसकी जिंदगी का जीता-जागता हिस्सा है, जिसे वह राजनीतिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक स्वार्थों से बचाकर उसकी गरिमा को बनाये रखना चाहता है, जिससे साहित्य की भाषा अपनी पहचान बनाये रख सके, जबकि राजनीति की भाषा उसके लिए कोई प्रमुख चीज नहीं हैं। बल्कि एक खास मकसद तक पहुँचने का साधन मात्र है।

(ग) संक्षेपण- साहित्य के परिप्रेक्ष्य में जो भाषा की महत्ता या गरिमा स्थापित है, वो राजनीति के परिप्रेक्ष्य में कदापि नहीं हो सकती है। राजनीतिक क्षेत्र में भाषा का प्रयोग व्यावहारिक स्वार्थों और कुत्सित आकांक्षा को तुष्ट करने के लिए किया जाता है। वही साहित्यकार अपने सहज भाव से भाषा को इन दोषों से बचाकर इसकी मूल शक्ति, गरिमा और उद्देश्य के लिए स्थापित करने को तत्पर रहता है। साहित्य सहज प्रकृति से इतना सशक्त है कि यह राजनीतिक परिपेक्ष्य में अपने अस्तित्व को नहीं विलीन करेगा बल्कि इसे राजनीति कली छिछली सत्ता से खुद को इस प्रकार पृथक कर लेगा कि साहित्य का साम्राज्य इस पर कभी हावी नहीं हो सकता और न ही भाषा की गरिमा का क्षरण कर सकेगा।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) परिपत्र किसे कहते हैं? स्वास्थ्य विभाग, उ.प्र. के प्रमुख सचिव की ओर से प्रदेश के पूर्वी जिलों के बच्चों को मस्तिष्क-ज्वर से बचाने के लिए उचित व्यवस्था हेतु परिपत्र तैयार कीजिए।

(ख) कार्यालय आदेश का परिचय दीजिए। गृह विभाग, उ.प्र. सरकार की ओर से जारी किसी कर्मचारी के स्थानान्तरण सम्बन्धी कार्यालयी आदेश का प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर : (क) परिपत्र (Circular) : शासन स्तर पर प्रायः ऐसे अवसर आते हैं, जब शासन के आदेशों, निर्देशों, निर्णयों, नीतियों महत्वपूर्ण सूचनाओं आदि से समस्त अधिकारियों, विभागाध्यक्षों, कार्यालयाध्यक्षों, मण्डलायुक्तों, जिलाधिकारियों आदि को समान रूप से अवगत कराये जाने की आवश्यकता होती है। ऐसे अवसरों पर एक ही शासनादेश का पत्र उन सभी अधिकारियों को भेजे जाते हैं, जिसे शासकीय परिपत्र (Govt. Circular) कहते हैं।

परिपत्र का नमूना

प्रेषक, संख्या-1321/आठ-6-320/80

श्री क ख ग

प्रमुख सचिव,

उ.प्र. सरकार।

सेवा में,

समस्त मुख्य चिकित्साधिकारी

स्वास्थ्य विभाग,

उत्तर प्रदेश शासन। दिनांक- उ.प्र. : सितंबर 2, 2020

विषय- बच्चों को मस्तिष्क ज्वर से बचाने हेतु।

महोदय,

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि प्रदेश के पूर्वी जिलों के बच्चों में मस्तिष्क ज्वर को देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने यह निश्चय किया है कि वहाँ मस्तिष्क ज्वर को रोकने के लिए तत्काल उचित कदम उठाये जायें।

इस सम्बन्ध में आप जो कार्यवाही करें, उसका साप्ताहिक विवरण इस मंत्रालय को भेजते रहें।

भवदीय

ह. -------

क, ख, ग

अपर सचिव।

संख्या -1321/आठ-6-320/80

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं

आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. .....

2. .....

3. .....

आज्ञा से

ह. -------

अ, ब, स

उप सचिव।

(ख) कार्यालय आदेश (Office Order)- कार्यालय आदेश शासकीय पत्राचार का वह रूप है, जिसका प्रयोग एक विभागाध्यक्ष द्वारा अथवा उसके अधीनस्थ किसी उच्चाधिकारी द्वारा अथवा किसी शाखा द्वारा अपने प्रशासकीय नियंत्रण में कार्य करने वाले कर्मचारियों के सेवा संबंधी मामले जैसे : तैनाती, स्थानान्तरण, अवकाश की स्वीकृति, निलम्बन, सेवा समाप्ति, अनुशासनिक मामले, प्रोन्नति के मामले, प्रत्यावेदन आदि पर लिये गये निर्णय के संबंध में प्रशासकीय दृष्टिकोण से जारी किये जाते हैं कार्यालय द्वारा बनाये गये सामान्य नियम को सूचना भी इसके द्वारा दी जाती है।

कार्यालय आदेश का नमूना

उत्तर प्रदेश शासन

गृह विभाग

संख्या- 539/बाइस-1/पी, 51/79

कार्यालय आदेश

एतद्द्वारा तात्कालिक प्रभाव से जनहित 1 कार्यहित में गृह विभाग के श्री क, ख, ग, जनसूचना अधिकारी गृह विभाग, लखनऊ को, गृह विभाग प्रयागराज कार्यालय से सम्बद्ध किया जाता है।

2- श्री क, ख, ग जन सूचना अधिकारी को निर्देशित किया जाता है कि वे तत्काल नवीन तैनाती को गृह विभाग को उपलब्ध कराये।

ह. ------

अ, ब, स

सचिव।

संख्या 530/बाइस-1/पी,51/79

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :-

1. गृह विभाग
2. लेखाकार एवं खजांची
3. सम्बन्धित कर्मचारीगण

आज्ञा से

ह. -----

त, थ, द

संयुक्त सचिव।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।

परिचित, आपत्ति, पूर्ण, धरती, प्रिय, जय, विहित, स्निग्ध, भय, शत्रु

उत्तर :	**शब्द**		**विलोम**
	परिचित	–	अपरिचित
	आपत्ति	–	अनापत्ति
	पूर्ण	–	अपूर्ण
	धरती	–	गगन
	प्रिय	–	अप्रिय
	जय	–	पराजय
	विहित	–	निषिद्ध
	स्निग्ध	–	अस्निग्ध
	भय	–	अभय
	शत्रु	–	मित्र

5. (क) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश कीजिए।

संगोष्ठी, प्रत्यक्ष, पराक्रम, निर्वसन, निस्सन्देह

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को विलग कीजिए।

शैव, नीलिमा, दाक्षिणात्य, खुर्दबीन, वर्तमान

उत्तर : (क)

उपसर्ग		शब्दरूप
सम्	–	संगोष्ठी, संयोग, संकल्प, संसर्ग
प्रति	–	प्रत्यक्ष, प्रत्येक, प्रतिकर, प्रतिनिधि
परा	–	पराक्रम, पराजय, पराभाव, परामर्श
निर्-निस्	–	निर्वसन, निर्जीव, निर्मल, निर्दोष
निस्	–	निस्सन्देह, निश्छल, निश्चय, निस्तेज

(ख)

प्रत्यय	–	शब्द रूप
अ	–	शैव, मौन, कौरव, नैश
इमा	–	नीलिमा, पूर्णिमा, गरिमा, लालिमा
त्य	–	दाक्षिणात्य, पाश्चात्य, पौवत्यि
ईन	–	खुर्दबीन, शौकीन, प्राचीन, दूरबीन
मान्	–	वर्तमान, बुद्धिमान, बेईमान

6. निम्नलिखित वाक्यों का पदबंधों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

(i) जो कृतज्ञ न हो

(ii) जो सूर्य न देखे ऐसी स्त्री

(iii) जो रूढ़ियों में विश्वास करता हो

(iv) जो पूजा के योग्य हो।

(v) जो देश से प्रेम करता हो

उत्तर : (i) जो कृतज्ञ न हो– कृतघ्न

(ii) जो सूर्य न देखे ऐसी स्त्री– असूर्यपश्या

(iii) जो रूढ़ियों में विश्वास करता हो– रूढ़िवादी

(iv) जो पूजा के योग्य हो– पूजनीय

(v) जो देश से प्रेम करता हो– देशभक्त

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

(i) राम घर जाती है।

(ii) मैंने जाना है।

(iii) मैंने आपके घर में रखी पुस्तक को देख ली।

(iv) विद्यालय में सभी कक्षा के विद्यार्थी बुलाए गए हैं।

(v) मनोज रोती है।

उत्तर : (i) राम घर जाता है।

(ii) मुझे जाना है।

(iii) मैं आपके घर में रखी पुस्तक को देख लिया।

(iv) विद्यालय में कक्षा के सभी विद्यार्थी बुलाए गए हैं।

(v) मनोज रोता है।

8. (ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए।

निष्यापी, पूर्ती, मुनी, लिपी, नीती

उत्तर :

अशुद्ध	–	शुद्ध
निष्यापी	–	निष्याप
पूर्ती	–	पूर्ति
मुनी	–	मुनि
लिपी	–	लिपि
नीती	–	नीति

9. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) यथा राजा तथा प्रजा

(ii) अरहर की टट्टी गुजराती ताला

(iii) आ बैल मुझे मार

(iv) नौ दो ग्यारह हो जाना

(v) जैसा देश वैसा भेष

(vi) दाल भात में मूसरचंद

(vii) ऊँची दुकान फीके पकवान

(viii) मान न मान मैं तेरा मेहमान

(ix) अन्धेर नगरी चौपट राजा

(x) आसमान से गिरा खजूर पर अटका

उत्तर :

(i) **यथा राजा तथा प्रजा (एक समान स्वभाव वाले)–** कंजूसी के गुण जिस प्रकार से सेठ जी में विद्यमान है, ठीक उसी प्रकार से उनके नौकरों में भी वह गुण परिलक्षित होता है, इसीलिए ठीक ही कहा गया है कि जैसा राजा वैसी प्रजा।

(ii) **अरहर की टट्टी गुजराती ताला (छोटी वस्तु की सुरक्षा में अधिक व्यय)–** इस जीर्ण शीर्ण पुराने मकान की सुरक्षा के लिए चारों ओर ऊँची मजबूत चहारदीवारी बनवाना अरहर की टट्टी गुजराती ताले के समान है।

(iii) **आ बैल मुझे मार (बिना कारण मुसीबत मोल लेना)–** विदेशी सामानों को चोर बाजार में बेचकर आपने बेकार ही ''आ बैल मुझे मार'' वाली स्थिति उत्पन्न कर दी है।

(iv) **नौ दो ग्यारह हो जाना (सबसे आँखे बचाकर भाग जाना)–** पुलिस के पहुँचने के पहले आतंकवादी नौ दो ग्यारह हो गये।

(v) **जैसा देश वैसा भेष (परिस्थितियों के अनुसार बदलना)–** विदेश में रहकर वहाँ के रस्म-रिवाज और पहनावे को अपनाना सही है। कहा भी गया है- जैसा देश वैसा भेस।

(vi) **दाल भात में मूसरचंद (दो के बीच में तीसरे का अनावश्यक हस्तक्षेप)–** हम दोनों के बीच में तर्क वितर्क हो ही रहा था कि जयदेव का दाल भात में मूसरचंद की भांति बीच में बोलना मुझे अच्छा नहीं लगा।

(vii) **ऊँची दुकान फीके पकवान (आडम्बर ही आडम्बर)–** वर्तमान युग में संतों के क्रिया-कलाप ऊँची दुकान फीके पकवान ही सिद्ध हो रहे हैं।

(viii) **मान न मान मैं तेरा मेहमान (जबरदस्ती गले पड़ना)–** मैंने रमेश को बुलाया तो था नहीं। मान न मान मैं तेरा मेहमान की भाँति जबरदस्ती सभा में शामिल हो गया।

(ix) **अन्धेर नगरी चौपट राजा (मूर्ख और गुणवान का समान आदर)–** अयोग्य अधिकारी होने पर सभी कामों में धांधली चलती है, ठीक ही कहा गया है, अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

(x) **आसमान से गिरा खजूर पर अटका (एक मुसीबत से निकलकर दूसरे में फंसना)–** केवल लालफीताशाही के कारण हमारी योजनाओं के अनेक कार्यक्रम कार्यान्वित नहीं हो पाते, क्योंकि असमान से गिरकर वे खजूर में अटक जाते हैं।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा, 2019

निबंध (ESSAY)

निर्धारित समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट : (i) **प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड से केवल एक–एक विषय का चयन कर कुल तीन निबंध हिन्दी अथवा अंग्रेजी अथवा उर्दू भाषा में लिखिए।**

(ii) **प्रत्येक निबंध में कुल प्रयुक्त शब्दों की अधिकतम सीमा 700 शब्दों की है।**

(iii) **प्रत्येक निबंध के लिए 50 अंक निर्धारित हैं।**

SECTION-A (अंक-50)

1. **Literature and Moral values.**
   साहित्य और नैतिक मूल्य।
2. **Sexual crime : cause and solution.**
   यौन अपराधः कारण और निवारण।
3. **One Nation, One Constitution.**
   एक देश, एक संविधान।

SECTION-B (अंक-50)

4. **Role of social media in public awareness.**
   जन जागरूकता में सोशल मीडिया की भूमिका।
5. **Digital Economy : possibilities and challenges.**
   डिजिटल अर्थव्यवस्था : संभावनाएं और चुनौतियां।
6. **Farmers of India : our pride.**
   भारत का किसान : हमारा अभिमान।

SECTION-C (अंक-50)

7. **Changing paradigm of Indian foreign policy**
   भारतीय विदेश नीति के बदलते प्रतिमान।
8. **Resourse management in India.**
   भारत में संसाधन प्रबंधन।
9. **Namami Gange Mission.**
   नमामि गंगे मिशन।

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2018
सामान्य हिन्दी एवं निबन्ध
हल प्रश्न-पत्र

समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट : (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।
(iii) पत्र, प्रार्थना–पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

मैं साहित्य को मुनष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदु:खकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है। मैं अनुभव करता हूँ कि हम लोग एक कठिन समय के भीतर से गुजर रहे हैं। आज नाना भाँति के संकीर्ण स्वार्थों ने मनुष्य को कुछ ऐसा अन्धा बना दिया है कि जाति धर्म निर्विशेष मुनष्य के हित की बात सोचना असम्भव हो गया है। ऐसा लग रहा है कि किसी विकट दुर्भाग्य के इंगित पर दलगत स्वार्थ–प्रेम ने मुनष्यता को दबोच लिया है। दुनिया छोटे-छोटे संकीर्ण स्वार्थों के आधार पर अनेक दलों में विभक्त हो गई है। अपने दल के बाहर का आदमी सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है। उसके रोने गाने तक पर असदुद्देश्य का आरोप किया जाता है। उसके तप और सत्यनिष्ठा का मजाक उड़ाया जाता है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। **(अंक-5)**

(ख) साहित्य के लक्ष्य के विषय में उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर विचार कीजिए। **(अंक-5)**

(ग) प्रस्तुत गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए। **(अंक-20)**

उत्तर- गद्यांश का भावार्थ

(क) लेखक के अनुसार सच्चे अर्थों में साहित्य वह होता है जो मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास कर सकने में समर्थ हो। ऐसा साहित्य जो मनुष्य को प्रेरित न कर सके या उसे कुण्ठा एवं हीनता से बाहर न निकाल सके, उसे साहित्य नहीं मात्र वाग्जाल कहना चाहिए। लेखक के अनुसार यह एक कठिन समय है जबकि समाज संकीर्ण मानसिकता एवं साम्प्रदायिक भेद-भाव का शिकार है। दलगत स्वार्थ ने मानवता को खण्डित किया है। आज महज मुनष्य की दलगत भिन्नता ही उसे मजाक का पात्र बनाती है।

(ख) 'साहित्य' का शाब्दिक अर्थ होता है - हित सहित। ऐसे समस्त विचार या संग्रह जो मानव मात्र के कल्याण के लिए हो 'साहित्य' कहलाते हैं। साहित्य मनुष्य में मानवीय गुणों का परिष्कार करके उसे स्वावलम्बी बनाता है, उसके हृदय को संवेदनशील एवं उदार बनाता है तथा उसके आत्मिक गुणों का विकास करता है। साहित्य मनुष्य को संकीर्ण स्वार्थों से उबार कर उसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास करता है। सच्चे अर्थों में साहित्य ही मनुष्य को मुनष्य बनाता है।

(ग) **मैं साहित्य ---------- संकोच होता है।**

व्याख्या– लेखक के अनुसार साहित्य का परम उद्देश्य मानव में मानवीय गुणों का विकास करना है। साहित्य से मनुष्य सदगति को प्राप्त करता है, वह कुण्ठा एवं हीनता से मुक्त होकर स्वावलम्बी बनता है। साहित्य से मनुष्य की आत्मा का विकास होता है। साहित्य से मनुष्य में सहनशीलता, संवेदना, परस्पर सुख-दु:ख के भावों के समझ का विकास होता है। यदि कोई साहित्य अपने उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति में विफल है तो वह साहित्य नहीं हो सकता ऐसी दशा में उसे 'वाग्जाल' कहना ही बेहतर है।

आज नाना ---------- असम्भव हो गया है।

व्याख्या– गद्यांश के अनुसार आज समाज में सर्वथा स्वार्थ व्याप्त है। स्वार्थ ने मनुष्य के विवेक को नष्ट कर दिया है और इसी विवेकहीनता ने समाज को भिन्न–भिन्न समुदायों एवं दलों में विभक्त कर दिया है। इसी स्वार्थ के अधीन होकर मनुष्य मात्र अपने ही जाति धर्म के हित में सोचता है, वह मानव मात्र के कल्याण के लिए सोच ही नहीं पाता।

दुनिया छोटे-छोटे ---------- हो गई है।

व्याख्या– आत्ममुग्धता स्वार्थ को जन्म देती है, स्वार्थ संकीर्णता को और संकीर्ण स्वार्थ समाज को खण्डित करता है तथा मनुष्य- मनुष्य में भेद पैदा करता है। भेद ही समाज को भिन्न-भिन्न दलों में विभक्त करता है।